आत्मा हंतक कौन होता है?

ब्ह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

आत्मा हंतक कौन होता है?

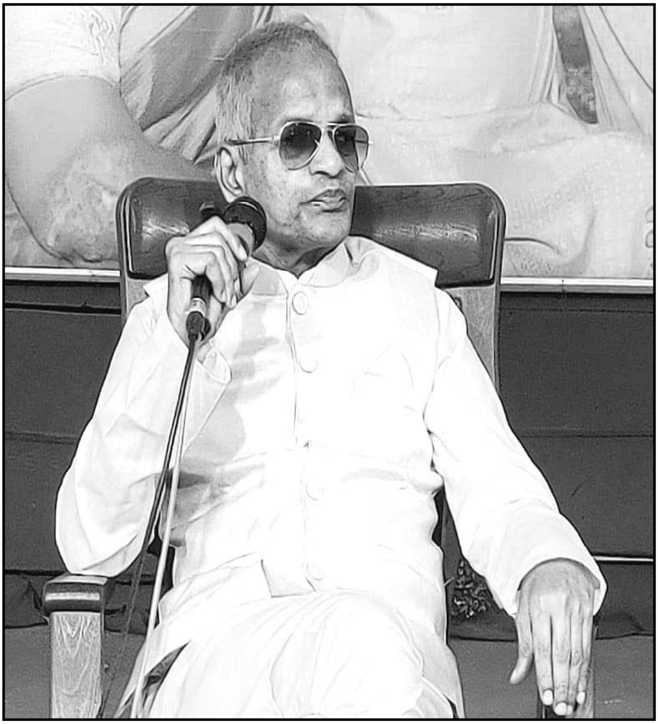

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.70/-

सूची

1. आत्मा हंतक कौन होता है? 3

2. आध्यात्मिक बीमारी — आध्यात्मिक अनारोग्य । 18

3. आत्मा का लाभ के लिए सोचिए! 21

4. आत्मा हंतकों मत बनिए ।.. 25

5. योगेश्वर का मतलब क्या है ? 27

6. व्यास भगवान । 32

7. 'वशिष्ट महर्षि जी'.. 38

8. श्री सदानंद योगी जी ने क्या कहा है? 41

9. श्री मोहम्मद प्रवक्ता ।.. 45

10.एक और योगेश्वर जी । 50

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

आत्मा हंतक कौन होता है?

योगियों में सबसे महान योगेश्वर है। एक कृष्णा, बुद्धा, जीसस, मोहम्मद, गुरु नानक, जैसे लोगों का स्थाई पहुंचने पर उन्हें योगेश्वर कहते हैं। ध्यान करने वालों को योगी कहते हैं। पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर कर पराकाष्ठा को पहुंचने वालों को योगेश्वर कहते हैं। ऐसे लोगों का हर एक शब्द आदरणीय, आलोचना लायक और आचरण लायक होते हैं।

ऐसे लोगों का संदेशों को फालतू में नहीं छोड़ना है। उन्हें छोड़ने से हमें ही नष्ट होता है। बहुत लोग पढ़ते हैं लेकिन पढ़ने के बाद ऐसे छोड़ने से कोई फायदा नहीं है। इसलिए जो कहते हैं उन्हें पढ़कर, उसका अर्थ जानना चाहिए। जब उनका अर्थ समझेंगे तभी आचरण करेंगे और जब आचरण करेंगे तभी फल प्राप्त होगा।

एक योगेश्वर ने क्या कहा है? कि

'जो लोग आत्मा को लापरवाही करते हैं, उन्हें आत्मा हंतक कहते हैं'।

इसके बारे में थोड़ा विवरण में जानेंगे।

हत्या, आत्महत्या, आत्मा हंतक, यह सारी शब्दों एक जेसे लग रहे हैं, लेकिन उनके अर्थ में थोड़ा सा फर्क है, अभी हम जानेंगे।

'हत्या', मतलब दूसरे शरीरों में आत्मा को नहीं रहने लायक वाला स्थिति, किसी शरीर को पहुंचाते हैं या नाश करते हैं, वह हत्या कहते हैं। उदाहरण के लिए चाकू से मारना, या पिस्तौल से मारना।

'आत्महत्या' मतलब कोई भी अपने आप को, शरीर में आत्मा को नहीं रहने लायक, यह शरीर को नाश करने वालों को आत्महत्या कहते हैं।

उदाहरण के लिए अपने आपको टांगना, आग में कूद जाना, एक पुल से नदी में कूद जाना, रेलगाड़ी के नीचे जाना, ऐसे करने से शरीर में आत्मा नहीं

रह पाता है, और शरीर से बाहर निकल जाता हैं। ऐसे काम करने वालों को आत्महत्या करने वाले कहते हैं।

आत्मा हंतक मतलब आत्मा को शरीर में ना रहने देने वालों नहीं है। जो भी अपने जीवन में आत्मा को बिल्कुल लापरवाही करते हैं, आत्मा के लिए या आत्मा का लाभ के लिए कुछ भी नहीं कर कर, आत्मा को बेफिक्र करने वालों को, 'आत्मा हंतक' कहते हैं।

यहां पर हमें कुछ विषयों जानना चाहिए। खासकर हम सब शरीर नहीं है, हम सब आत्माएं हैं। हम जो आत्मा है, ऊपर लोक से इस पृथ्वी पर आते वक्त, हमनें एक प्रणालिका कर कर आते हैं, क्योंकि ऊपर लोक में सिर्फ आत्मा होते हैं। आत्मा, और ऊपर लोकों को पहुंचने के लिए, और बड़ा महान स्थिति पाने के लिए, हमें ध्यान करना चाहिए और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यह दोनों पृथ्वी पर ही शरीर के साथ साधना कर कर हासिल करना चाहिए। इसीलिए जब हम पृथ्वी पर शरीर लेते हैं, उस शरीर से ध्यान कर कर, ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, ऐसा प्रणालिका आत्मा बनाता है।

ऐसे प्रणालीका के साथ पृथ्वी पर आकर, हम जो आत्मा है एक मां के गर्भ में शिशु में प्रवेश करते हैं। धीरे-धीरे 9 महीने पूरे करने के बाद मां के गर्भ से बाहर निकलते हैं। मतलब हम जन्म लिए हैं। ऐसे जन्म लेने तक हमारा प्रणालीका हमें याद रहती है। लेकिन बाद में हमारे परिवार का प्रभाव, परिसर का प्रभाव,और समाज का प्रभाव, हम पर पड़ता है।

मैं आत्मा हूँ का विषय को भूल जाते हैं। जो मां के गर्भ में जिस शरीर तैयार हुआ, उस शरीर को 'मैं' समझते हैं। उसी शरीर में 'मैं' आया हूँ का विषय भूल जाते हैं। क्योंकि शरीर 'मां' ने बनाई है, और उस शरीर में, हम जो आत्मायें हैं ऊपर लोकों से आए हैं।

विचित्र कि बात क्या है? कि हम वहां पर जो निर्णय कर चुके हैं, और जो करने चाहते हैं, वह सब कुछ हम भूल जाते हैं। भूल कर अपने परिस्थितियों के प्रभाव में पड़ जाते हैं। हम जिस परिवार में पैदा हुए हैं, उस परिवार को अपना

समझकर, अपना जाती, अपना मज़हब, सब अपने समझते हैं। ऐसे करते करते, साथ आठ वर्ष माता पिता के प्रभाव, हम पर बहुत होता है। वह जो कहते हैं वही करते हैं, और ऐसे ही हम व्यवहार करते हैं और बाद में समाज में जाते हैं।

वैसे ही समाज में जिसके पास ज्यादा पैसे हैं उन्हीं को महानता देते हैं, और गौरव करते हैं। जितना ज्यादा धन होता है, उतना महान समझते हैं। जिसके पास धन नहीं है उन्हें कुछ भी मान्यता नहीं देते हैं।

और कुछ लोग बड़े बड़े पदों पर, बड़े-बड़े उद्योग प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। और कुछ लोग सिनेमा क्षेत्र में, या किसी और व्यापार क्षेत्र में, जैसे मुकेश अंबानी, या खेल में बहुत महान स्थाई पहुंचने वालों को इज्जत और गौरव मिलती है, सब सोचते हैं।

ऐसे स्थिति प्राप्त करने को देखते हैं। उस गौरव भाव यहां पर मिलने के बाद अपने आप को बहुत खुश किस्मत समझकर, आनंदित होता है। लेकिन विचित्र की बात क्या है कि, इस पृथ्वी पर जितना भी महान बने, यहां जितना महान कार्यक्रम करें, करोड़ों रूपए बनाएं, शरीर छोड़ने के बाद एक भी चीज़ आपके साथ नहीं आता है। यह सब यहीं पर छोड़ना पड़ता है।

जो भी यहां पर महान समझते हो, जिसके लिए पूरा जीवन प्रयास करते हो, श्रम करते हो, रात दिन कष्ट करते हो, यह सभी, मरने के बाद आपको छोड़ देते हैं। आप जो आत्मा हैं अकेले ऊपर चलता है। ऐसे जब आप मरते हैं तभी आपको स्पष्ट मालूम होता है कि आप आत्मा है। सामान्य बात यह है कि गुरु जब आपको कहते हैं कि आप शरीर नहीं है, आप आत्मा है, आप सब लोग सुनते हैं लेकिन शरीर जैसे ही जीते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि आप मालूम कर चुके हैं, लेकिन उसका अर्थ समझ नहीं पाया।

यह बात तभी आपको समझ आता है जब आप मरने के बाद सिर्फ आत्मा ही रहेगा, तब आप खुद को समझ आता है कि मैं आत्मा हूँ। उतना ही नहीं जीवन भर, रात दिन कष्ट कर कर प्राप्त किए चीजों को पृथ्वी पर ही छोड़ना

पड़ता है। तब आपको बहुत दुख होता है। और कहते हैं कि 70 साल 80 साल का पूरा श्रम बेकार हो गया है। जितना भी हासिल किए हैं वह सब छोड़कर आना पड़ा, मैंने कितना नष्ट हो गया, करके सोचने से अब क्या फायदा?

हर एक को मरने के बाद समझ आता है। अरे यह सब कमाने के लिए मैंने कितने गलतियों की हैं, पापों किए हैं, कितना लोगों को बेईमानी किया हूँ। और यह सब में से कोई भी चीज़ मेरे साथ नहीं आया है। इतना ही नहीं जिन लोगों के लिए मैंने यह सब काम किया हूँ, वह भी मेरे साथ नहीं आ रहा है। यह समझते हैं। यह जान लेते हैं। विचित्र की बात यह है कि जो भी पापों किया है, वह सब उनके साथ आते हैं।

इतना ही नहीं जब अपना शरीर को जलाते हुए देखता है, तब समझ आता है कि वो शरीर नहीं है, और आत्मा है। तब सोचने लगते हैं, अरे अगर इस विषय को मैं जब पृथ्वी पर था, तभी जान लेता, तब कितना अच्छा होता। ऐसा हर एक के विषय में, मरने के बाद यहीं सोच रहता है।

क्योंकि यह विषय जब पृथ्वी पर रहते हैं, कुछ लोगों को सद्गुरु के द्वारा जानते हैं, सद्गुरु उन्हें कहते हैं कि वह शरीर नहीं है, वह आत्मा है। कुछ लोग किताबें पढ़कर, उपन्यासों द्वारा सुनते हैं, लेकिन शरीर ही है, जैसे जीते हैं।

इसलिए मैं पहले से कह रहा हूँ, जानना अलग है और आचरण करना अलग है। क्यों कि जो जाना है वह कहता है, लेकिन जिनको समझ आया है वह आचरण में लाता है, और उनका लाभ प्राप्त करता है। इसलिए जानना महान नहीं है, उन्हें आचरण में लाने वाला ही महान है।

इसीलिए जो भी अपने आप आत्मा होकर भी, आत्मा लाभ के लिए कुछ नहीं कर कर सिर्फ देह लाभ के लिए पूरा जीवन कृषि करते हैं, उन्हीं को "आत्मा हंतकों" कहते हैं, एक योगेश्वर ने कहा है।

ऐसे आत्मा, ऐसे शरीर में रहने से, या ना रहने से, एक ही है।

क्योंकि ? वह शरीर में प्रवेश किया है, इसलिए उस शरीर का कुछ

जरूरतें होते हैं, वह अनिवार्य है। अगर जरूरतों को पूरा नहीं करते हैं इस शरीर पृथ्वी पर नहीं रह पाता है। इसलिए उनके लिए प्रयत्न करना, कृषि करना, और कमाना जरूरी है।

इसलिए अपने जरूरतों तक सीमित रह कर, बाकी समय को आत्मा के लिए, और आत्मा लाभ के लिए और आत्मा का उन्नति के लिए, कृषि करना चाहिए। ऐसे लोग अपना जन्म को साधक करने वाला होता है। विचित्र की बात यह है कि, इस धन के व्यामोह में जितना ज्यादा कमाते हो, उतना ज्यादा कमाने का इच्छा बढ़ता रहता है। जबकि उनको जरूरतों के लिए काफी है, वह कमाता रहता है।

क्योंकि ? मेरे बच्चे हैं, उनके लिए भी कमाना है। और कमाता रहता है। क्योंकि पोते हैं, ऐसे धन के विषय में किसी को लिमिट नहीं रहता है। ऐसे कमाते रहते हैं। उदाहरण के लिए मुकेश अंबानी को देखिए, कितने लाखों-करोड़ों है और फिर भी कमाता रहता है।

लेकिन एक विषय याद रखिए कि अगर आप आत्मा हैं, अपने जरूरतों से ज्यादा कमाना सब बेकार है, यह समझना चाहिए। क्योंकि अभी आपको जितना भी कहेंगे, समझते नहीं हैं। लेकिन कब समझेगा? जब आप शरीर को छोड़कर जाएंगे मतलब मरने के बाद समझेंगे।

क्योंकि पूरा जीवन कष्ट कर कर यहां पर प्राप्त किए करोड़ों पैसे यहां पर, पृथ्वी पर ही छोड़कर, आप जो आत्मा हैं, ऊपर लोको में जाने के वक्त स्पष्ट से समझ आता है।

तब आपको दुख होता है कि अपना पूरा जीवन बेकार किया है। मेरा पूरा समय को नष्ट किया हूँ, अपनी शक्ति को, अपना वाक को, अपनी बुद्धि को और अपने समझदारी को, सभी को नष्ट हो गया, करके बाधा होता है, तब उसे कोई फायदा नहीं होगा। और क्या सोचता है?

पूरा जीवन कष्ट करके जो आत्मा के साथ नहीं आते हैं उन्हीं को मैंने कमाया है। और तब अपने आप को बहुत समझदार समझते थे। यही है क्या

मेरी समझदारी, होशियारी करके, दुख होने से क्या फायदा है?

क्योंकि शरीर को धन से लाभ होगा, आत्मा को ज्ञान से ही लाभ होगा। लेकिन मानव लोग अपने आप को शरीर समझकर रहने से, सभी लोग धन प्राप्त करने के लिए ही प्रमुखता देते हैं। इतना ही नहीं और समझते हैं कि जो धनी है, जिसके पास ज्यादा धन है वही महान है। और उन्हीं को प्रमुखता देते हैं। जिसके पास धन नहीं है उन्हें हीन भाव से देखते हैं। इसीलिए हर एक धन कमाने के लिए ही प्राथमिकता देते हैं। इतना ही नहीं अपने पूरा समय उसी में, धन प्राप्त करने को देते हैं। वह उद्योग करने से, या व्यापार करना, व्यवसाय केलिए, कोई भी काम करना, सभी धन कमाने के लिए ही करते हैं।

क्योंकि धन से शरीर को सुख मिलता है, और उनका महानता बढ़ता है, समाज में गौरव मिलता है। इसलिए मानव लोग धन कमाने में ज्यादा प्रमुखता देते हैं। लेकिन किसी को भी यह मालूम नहीं है कि वह खुद आत्मा है। यही सृष्टि का विचित्र बात है और भगवान का माया है।

अगर इस माया से बाहर निकलना है तो? लगभग 300 - 400 जन्मों लेना पड़ता है, यह बात पत्री जी ने कहा है।

इसलिए बड़ों ने कहा है कि सद्गुरु को आश्रय करना, सत्य को आश्रय करना, सत्य में जीना। क्योंकि सद्गुरु के अलावा कोई आपको सत्य नहीं कह पाता है कि आप आत्मा है, और आपको ज्ञान चाहिए। इसलिए अगर इस माया से बाहर निकलना है, या मैं आत्मा हूँ का सत्य जानना है, या ज्ञान प्राप्त करना है, कोई भी एक सद्गुरु को जरूर आश्रय करना ही है। नहीं तो उनका जन्म बेकार करने वाले होंगे और जैसे योगियों ने कहा है कि, वह“आत्मा हंतकों” बन जाते हैं।

और विचित्र कि बात क्या है? कि अगर सद्गुरु भी मिला और उनसे हम आत्मा है को जाना, फिर भी कुछ लोग अपने आप को शरीर का लाभ के विषय में, धन के विषय में, जितना भी कमाया है उससे संतुष्टि नहीं होते हैं। लेकिन

जो आप आत्मा हैं उनके लिए ज्ञान प्राप्त करने के विषय में संतुष्ट हो जाते हैं। ध्यान करने के विषय में, या ज्ञान प्राप्त करने के विषय में, जहां के वहां संतुष्ट होकर, इससे ज्यादा हम क्या कर सकते हैं कहकर रह जाते हैं।

लेकिन योगियों क्या कहते हैं कि, 'जो आपके साथ नहीं आने वाले धन के विषय में संतुष्टि होना चाहिए, बल्कि आपके साथ आने वाले ज्ञान के विषय में संतुष्टि नहीं रहना चाहिए'।

धन के विषय में संतुष्टि रहने के लिए मैं क्यों कहता हूँ कि, धन के विषय में अगर आप संतुष्टि रहेंगे तब आप धर्म से कमाएंगे, और जो कमाए हुआ धन आपके जरूरतों तक सीमित रहेंगे, और अपना जीवन बिताएंगे। आप किसी भी क्षेत्र में होंगे, आप धर्म से ही कमाएंगे।

अगर आप अपनी इच्छाओं के गुलाम बनकर अधर्म तरीके से कमाना शुरू करेंगे, तब लाभ को छोड़िए, आप बहुत नष्ट होंगे और कष्टों भी प्राप्त करेंगे। इसीलिए जो भी है उससे संतुष्टि रहकर, आपको याद रखना है कि आपने जो पिछले जन्मों में अर्हत प्राप्त किया है, उसी के हिसाब से आप को प्रस्तुत काल में आप को मिली हैं। बिना अर्हत आपको ज्यादा चाहने से वो कहां से मिलेगा?

सच में आप पृथ्वी पर धन कमाने नहीं आए हैं। आप आए हैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए और यहां आने के बाद आपने भूल गया है। सबको देखकर, उन्हें जैसे धन कमाना चाह रहे हो, लेकिन आप आए हैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए। इसीलिए जितना भी हो, धन के विषय में संतुष्टि रहकर, ज्ञान के विषय में संतुष्टि नहीं रहना है।

आपके अर्हत के हिसाब से आपको जो मिलना था वह आ गया है। अगर भविष्य में कुछ आना है, वह जरूर उस समय में मिल जाएंगे। उसके लिए आपको प्रयत्न करने का जरूरत नहीं है, और अधर्म से, और सृष्टि के विरुद्ध होकर, कमाने की जरूरत नहीं है।

आप जो आत्मा है और ज्ञान जो आपको लाभ करेगा उसको और ज्यादा प्राप्त करना है। और आगे बढ़ना है। श्री कृष्ण जी, बुद्धा, पत्री जी, की जैसे महान बनना है। और महान लोकों को जाना है। क्योंकि इस सृष्टि में ज्ञान अनंत है। इनका सीमाएं नहीं है। जितना भी प्राप्त करते हैं, और पाने के लिए बहुत है। और महान बन सकते हैं।

पत्री जी ने क्या कहा? जितना शिव जी का ज्ञान है उनसे ज्यादा किसी को नहीं है। वह देवताओं में सबसे महान है। उतना महान शिव जी अपने पास का ज्ञान से संतुष्टि न रहकर और अनंत ज्ञान प्राप्त करने के लिए निरंतर ध्यान कर रहे हैं। तब हम सब कितना कष्ट करना चाहिए? कितना कृषि करना चाहिए? कितना ज्ञान प्राप्त करना चाहिए? सोचिए! कहते हैं पत्री जी।

असलियत में लोगों को पता नहीं है शिव जी क्यों ध्यान में बैठे हैं? सोचिए आप जो छोटा सा ध्यान कर रहे हैं, उससे आप संतुष्टि हो रहे हैं। थोड़ा सा भी ज्ञान नहीं प्राप्त करते हैं फिर भी आप संतुष्टि हो जाते हैं। सोचिए, शिव जी उल्लू है क्या, बुद्धि कम है क्या? बेकार में ध्यान कर रहा है क्या? मतलब नहीं है ना, यह बात समझ आता हैं।

इस अनंतमय सृष्टि में कोई भी जितना ज्यादा ध्यान करते हैं, उतना शक्तिमय बनते हैं और जितना ज्यादा ज्ञान प्राप्त करते हैं, उतना महान होते हैं। इसलिए देखिए चिरंजीवी को कहने वाले, जैसे हनुमान जी, परशुराम जी, अश्वत्थामा जी, विभीषण जी, जैसे लोग अभी भी ध्यान स्थिति में पृथ्वी पर है। वह लोग कई युगों से आगे बढ़ते रहते हैं।

इसलिए जानिए कि ध्यान के विषय में और ज्ञान के विषय में संतुष्टि नहीं रहना चाहिए, कारण यही है कि आप सभी आत्माएं हैं।

जब मेरे विषय के बारे में आते हैं, हर दिन जो महान लोगों का संदेशों दे रहा हूँ, योगेश्वरों का बोध दे रहा हूँ, उनका ज्ञान अपनी ही अनुभव से बता रहा हूँ। 22 साल से पहले मुझे पत्री जी से परिचय हुआ है। बातों के संदर्भ में एक बार उसने क्या कहा है कि, आप शरीर नहीं है। तब मुझे होश उड़ गया है।

बुध्दि काम नहीं किया। तब मैं फिर से पूछा, मतलब अगर मैं शरीर नहीं हूँ, मैं कौन हूँ? तब उसने कहा है कि आप आत्मा है। तब मुझे और आश्चर्य हुआ। क्योंकि तब तक मैंने यह शब्द कही सुना नहीं। इसीलिए मैं उनका विश्वास नहीं किया। लेकिन वह आराम से, आसानी से वह बात कह दिया। कि मैं शरीर नहीं हूँ और मैं आत्मा हूँ। और यह दोनों विषयों मैंने पहले कभी सुना नहीं, और मेरे सोच में भी नहीं आया है।

तब मेरा उम्र 53 साल था। रात दिन कष्ट कर कर पैसे कमाया हूँ, एक प्रकार से समझो कि मैंने करोड़ों कमाया है। तब मैंने सोचा कि इतने करोड़ों कमाया है, यह करोड़ों, मैं जो आत्मा हूँ, उनके लिए लाभ करेगा क्या? तब मुझे समझ आया है कि करोड़ों धन से मुझे लाभ नहीं होगा, उपयोग नहीं है। यह बात मैंने बार-बार विश्लेषण करने के बाद समझ आया है। इतना ही नहीं मैंने जो ज़मीन कमाया है, या इमारतें, या कुछ इंडस्ट्री, कारोबार, या सोना, या कुछ और संपत्ति, यह सब इस पृथ्वी पर ही छोड़ना पड़ेगा। यह बात भी मैंने समझा है।

तब मुझे आश्चर्य हुआ है कि मैं अपने 53 साल का जीवन बेकार कर दिया है क्या। एक नहीं, दो नहीं,पूरा 53 साल अपना जीवन को बेकार किया है का समझ आया है। इस 53 साल आत्मा के लिए कुछ नहीं किया हूँ और पूरा जीवन कितना नष्ट कर दिया हूँ करके दुख हुआ है।

तब इन योगीश्वरों का संदेशों मालूम होकर, मैं अपना 53 साल “आत्मा हंतक” होकर ही जिया हूँ का समझ आया है।

तब फिर से मैंने सोचा था। अगर मैं आत्मा हूँ, मुझे लाभ पाना है तो मुझे ज्ञान प्राप्त करना है। और समझ आया है कि सिर्फ ज्ञान ही मुझे लाभ देगा। इतना ही नहीं सिर्फ ज्ञान ही मुझे महान बनेगा, और सिर्फ ज्ञान ही मेरे सारे कर्मों को दग्ध करेगा और सिर्फ ज्ञान ही मुझे ऊपर लोकों को पहुंचाता है। सिर्फ ज्ञान से ही मुझे मोक्ष मिलेगा, और सिर्फ ज्ञान ही मेरे जीवन का लक्ष्य, सत्य लोक पहुंचा सकता है, यह बात समझ आया है।

और मैं फिर सोचा। अभी तक तो मैं थोड़ा सा भी ज्ञान नहीं प्राप्त किया हूँ। अब मैं क्या करूं? असलियत में ज्ञान का मतलब क्या है? ज्ञान प्राप्त करना है तो क्या करना है? ज्ञान प्राप्त करने से क्या-क्या लाभ मिलेंगे? और यह सब कैसे जानेंगे? यह सारे प्रश्न आए हैं।

तब मुझे समझ आया है कि केवल पत्री जी के अलावा कोई भी मुझे, मैं जो आत्मा हूँ, उन्हें जो चाहिए कोई दूसरा मुझे बता नहीं सकता है। उसने बताया है कि, मैं जो आत्मा हूँ, उनके लाभ के लिए चार विषयों करना चाहिए।

1) 'श्वास पर ध्यास' रखकर कठोर ध्यान साधना करना, साथ-साथ सात्विक शाकाहार लेना, यह दोनों जरूर करना चाहिए।

2) आत्मज्ञान संबंधित किताबें मतलब योगियों, महर्षियों, योगेश्वरों, का आत्मज्ञान संबंधित किताबें पढ़ना चाहिए, यह भी जाना हूँ।

3) ऐसे ही आत्मज्ञान बोध करने वालों का संदेशों सुनना चाहिए। इसके अलावा कोई भी शरीर संबंधित या मनो संबंधित बातें, जितना भी सुने, उनसे कोई फायदा नहीं है, का समझ आया है।

इसलिए वशिष्ठ महर्षि इन तीनों को 'आध्यात्मिक त्रिरत्नों' कहते हैं।

4) पत्रीजी और एक मुख्य विषय बताया है। इस ज्ञान मार्ग में सेवा करना चाहिए।

तब मैं फिर से सोचा। पत्री जी ने इस ज्ञान मार्ग में सेवा करने को क्यों कहा है?

उसने इस सृष्टि का एक महान धर्म सूक्ष्म बताया है की 'जो भी आप बांटते हैं, वह बढ़ता रहता है'। हो सकता है वह धन हो, आनंद हो, शांति हो, ज्ञान हो, कुछ भी हो। इसलिए अभी मुझे चाहिए ज्ञान। अगर इस ज्ञान को बढ़ाना है तो उन्हें बांटना है, का समझ आया है। तब से मैंने ज्ञान प्राप्त करना, और उस ज्ञान को बांटना शुरू किया। ऐसे बांटने शुरू करते ही मुझ में थोड़ा-थोड़ा और ज्ञान बढ़ता रहा।

पत्री जी का कहने वाला बात, जैसे बांटते रहते हैं, ऐसे ही प्राप्त होता रहता है। तब मैं जब बता रहा था, मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे और बताने के लिए क्या है समझ रहा था, लेकिन अंदर से ही वह आता रहता है। तब मुझे पत्री जी का जो बताया गया सत्य का अर्थ मालूम हुआ। यह प्रकृति का सूत्र सबको लागू है।

इसीलिए जानिए कि कोई भी 'जो बांटता है, वह बढ़ता रहता है'। वह ज्ञान भी हो सकता है, धन भी, कुछ भी जो बांटते हो, जरूर वह बढ़ता रहता है। ज्ञान सिर्फ कुछ पढ़कर प्राप्त नहीं करना, जो ज्ञान आपके पास है, उसको बताते रहेगा तो बढ़ता ही रहेगा यह बात समझ आया है।

और मैं आगे सोचा कि, जो प्रकृति मुझे धन दिया है उसको वृदा क्यों करना है। उसको मेरे ज्ञान प्राप्त करने के लिए खर्च करना शुरू कर दिया। तब से मैं अय्याशी के लिए या भोगों के लिए कुछ भी खर्च नहीं करता हूँ। लेकिन मेरे बच्चे करोड़ों का इमारते बनाए हैं। लेकिन हम उसी पुराने घर में रहते हैं। लेकिन हमारे ज़रूरतें को पाते हैं। इसीलिए ज्ञान को बढ़ाने के लिए भीमावरम में तीन दिवसीय आत्मज्ञान शिक्षण शिविर को शुरू किया है।

इतना ही नहीं मेरे सारे कारोबारों को बंद कर दिया, सारे पदों को छोड़ दिया, मेरे बच्चों को अपने-अपने घर को भेज दिया, समारोहों में या शादियों में या किसी के मरने पर, या कई प्रकार के अपने अय्याशियों को छोड़ दिया हूँ। करण यही है कि उस समय को भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल कर रहा हूँ।

तब भी हमें संतुष्टि नहीं हुआ। कारण ज्ञान के विषय में क्यों संतुष्टि होना है? तब से बाकी दिनों भी हर जगह जाकर इस ज्ञान का बोध करना शुरू किए हैं।

धीरे-धीरे दूसरे जिलों जाना, दूसरे प्रदेशों जाना, दूसरे देश में जाना भी कर रहे हैं। जितना ज्यादा हो सकता है उतना घूम रहे हैं। क्यों चुप बैठना है। क्या सिर्फ घर में सोना है, इसीलिए लगातार घूम रहे हैं। तभी मैने 53 साल जीवन

को बर्बाद किया है अब और क्यों बर्बाद करना है। मेरे सारे यौवन जीवन खत्म हो गया है, कम से कम इस उम्र में जितना हो सकता है घूम कर, जितना ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं प्राप्त करना ही हमारा दोनों का आकांक्षा है।

क्योंकि जब मैं व्यापार करता था, एक दिन भी मैंने राइस मिल जाना बंद नहीं किया। अगर घर में बैठता था, मुझे लगता था कि वहां पर कुछ हो रहा है, क्या हो जाएगा, कुछ नष्ट हो रहा है, अगर नहीं जाएंगे तो कैसे? यह सब सोचकर मनस में दुख होता था। तब मैंने अगला दिन राइस मिल को जाता था।

तब मैं पैसे के बारे में या व्यापार के बारे में जितना मनो वेदना रखता था, अभी मैं ज्ञान के विषय में भी उतना ही चिंतित हूँ। अगर एक भी दिन घर में बैठा हूँ तो अंदर से मुझे कहता हे कि आप थक गए क्या? इतना से ही करके तक गया है। अंदर से आत्मा का शोर आता था। तब मैं फिर से अपना बैग को लेकर कहीं चले जाता हूँ। मैं और मेरी मैडम, जो भी बुलाता है उनके पास चले जाते हैं। नहीं तो हम आ रहे हैं करके बता कर जा रहे हैं।

लेकिन जो संतुष्टि जाने में मिलती है, उसे घर में रहने से नहीं होता है। वह सिर्फ अनुभव करने वाले को मालूम होता है। मुझे यह समझ आया है कि जितना आत्मा अंदर से आवेदन होता है, उतना वह लोग नष्ट हो रहा है। इसी प्रकार आपका आत्मा जितना आनंद होता है उतना आप महान बढ़ रहे हैं। इसलिए हम दोनों के तरह आप भी अंदर का आत्मा को देखिए, तब आपको और कुछ जरूरत नहीं होती ।

अगर आपके अंतरात्मा में कुछ भी दुख हो रहा है, मतलब आत्मा आवेदन हो रही है, मतलब समझिए कि आप आत्मा को नष्ट कर रहे हो। आत्मा आवेदन अलग है और मनो वेदना अलग है। जब मैं व्यापर कर रहा था तब मुझे मनो वेदना था। लेकिन इस आध्यात्मिक मार्ग में आने के बाद वह आत्मा आवेदना है। प्रापंचिक नष्ट होते हुए समय मनस का वेदना होता है। जब आत्मा को नष्ट हो रहा है आत्मा आवेदन होता है। यह सभी को जानना चाहिए।

आध्यात्मिक मार्ग में जब चलते हैं तब प्रकृति हमें बहुत अवसर देती है।

लेकिन उसको मिलने के बाद, अगर मनस का सलाह को सुनकर, उसको परवाह नहीं करते हो तब आत्मा आवेदन होता है। लेकिन आप आत्मा का लाभ वाले कर्म करने से, प्रकृति से सहायता मिलता है। सच में मुझे या मेरी मेडम इतने घूमते हैं, जब जरूरत है सहायता मिलता और सहकार मिलता है।

हम तो कुछ भी नहीं कर रहे हैं। हम तो सिर्फ अपना ज्ञान थोड़ा बहुत अपने मुंह से कुछ लोगों को बांट रहे हैं। बस आपके पास जो धन है, जैसे बांटते हो, वैसे ही ज्ञान को भी जितना ज्यादा लोगों को बांट सकते हो बांटना है। यह बात मैंने पत्री जी से समझा है । और पत्री जी भी वही काम किया है।

वह जब मरने का परिस्थिति भी आया तब भी लद्दाख को गया था। तब मुझे समझ आया है कि हममें जब तक प्राण है, तब तक हमें करना ही है। असलियत में हमें क्यों संतुष्टि होना है? यह शरीर आपको दिया है, तब उपयोग करो। अगर इससे निरुपयोगी काम क्यों करते हो? आत्मा का लाभ नहीं पहुंचाने वाले काम क्यों करते हो? और कितने जन्म लेंगे? और कितने शरीरों को बदलेंगे? हमारा खुश किस्मत है कि हम इसी जन्म में पत्री जी जैसे गुरु परिचय हुआ और रास्ता दिखाया। उसे हम उपयोग करना चाहिए।

सोचिए। जब भी मैं यह काम कर रहा हूँ, मेरी मैडम को यह सारे विषयों बताता रहता हूँ। और चर्चा करते हैं। उनमें भी थोड़ा प्रोत्साहन आया है। वह भी निरंतर काम कर रही है।

इसीलिए धन कमाने में संतुष्टि रहो। ज्ञान प्राप्त करने में संतुष्टि मत रहो। इसका मुख्य कारण आप शरीर नहीं है, आप आत्मा हैं, यह समझिए। पूरा जीवन आत्म संबंधित कार्य नहीं करने से आप “आत्मा हंतक” हो जाएंगे। आत्मा को नष्ट मत करिए, आत्मा को वेदना मत पहूँचाना है।

मानव को जरूरतें होंगे, यह मैं समझता हूँ। जरूरतों को पूरा करो, यह गलत नहीं है। मानव को खाना, रहने का घर, पहनने का वस्त्र, और एक साथी, जीवन में होना चाहिए। उनके लिए धर्म से कमाई, यह कोई मना नहीं कर रहा है। वह सब पूरा करते हुए ही, आपका समय को, जितना हो सकता है, बर्बाद

ना कर कर आत्मा के लाभ के लिए उपयोग कीजिए।

और यहां पर अति उत्साह गलत है। कुछ लोग कहते हैं कि मैं अपना काम छोड़कर सिर्फ यही काम करूंगा। काम बंद कर कर क्या करेंगे? खाना कहां से मिलेगा? आपका परिवार को कैसे चलाएगा? उनका क्या करेंगे ? शादी करने के बाद साथी को क्या करेगा? बच्चों को क्या करेंगे? अपना संसार का धर्म रखते हुए ही, आपका दिया हुआ अवसर को उपयोग करना है। बस वही करना है आपको।

याद रखिए, 'बिना भुक्ति, मुक्ति नहीं होगा। जब भुक्ति होगा, तभी मुक्ति होगा'।

जब भी आप भुक्ति को देखते हुए, अपना समय और जीवन को बर्बाद ना कर कर, ज्ञान प्राप्त करने को इस्तेमाल करते हैं, अगला जन्म और ज्यादा अनुकूल रहेगा। इसी जन्म में सब कुछ आने को मत सोचिए, लेकिन प्रयत्न करिए, अपना समय को बर्बाद नहीं करना है।

बेकार चीज़ों पर अपना समय, शक्ति, वाक को खर्च नहीं करना है। हम सब आत्माएं हैं, का विषय भूलना नहीं चाहिए। बार-बार याद रखना हैं। 'मैं शरीर नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ'। यह बार-बार याद रखना चाहिए। एक प्रणालीका से इस पृथ्वी पर आए हैं। उस प्रणालिका के अलावा अगर आप यहां पर जीते हैं तब आपका शरीर के अंदर आत्मा आवेदना होता है।

आपको सब कुछ अपना आत्मा कहता है। इसलिए अगर आत्मा को लापरवाही करते हैं, तब आप ही नष्ट होते हैं। अगर उनको सुनेंगे तब आप ही लाभ पाएंगे। यह सब को अगर देखेंगे समझ आता है। इसलिए मुझे पत्री जी पर इतना गौरव है। नहीं तो मैं कहां, कैसे रहता था। किस परिस्थिति में रहता था। मैं, जो आत्मा हूँ उन्हें क्या चाहिए, और ज्ञान प्राप्त करने के लिए क्या-क्या चाहिए, यह सब वह सिखाएं है।

एक संदर्भ में, मैं और मैडम जब पत्री जी के साथ बैठा था, उसने क्या कहा है? कि, ‘अम्मा और मैं क्या बताऊं? आपको जो भी बताना है, मैंने सब कुछ बता दिया, और मेरे पास कुछ नहीं है’।

क्योंकि बहुत लोग इंतजार करते हैं कि, पत्री जी और क्या कहेंगे? और क्या कहेंगे? जैसे कि, जो भी बताए है अभी तक, वह सबी आचरण में लाए हैं।

मुझे आश्चर्य हुआ है कि जो भी उनके पास था वह सब बता दिया है, बिना छुपाकर। वही बातें मुझे इंस्पिरेशन है। यही प्रोत्साहन करता है। मैं भी सोचा था कि, बिना कुछ छुपा कर, मेरे पास जो भी है वह सभी को बांटना ही चाहिए। पहले तो मैं सोचता था कि वो सब मेरे से आगे बढ़ जाएंगे ना?

लेकिन बाद में मुझे समझ आया है कि कहां बढ़ेंगे? कितना बढ़ेंगे? पहला उनको समझ आएगा हैं क्या? कहां आचरण करेंगे? ज्ञान तो उतना आसान नहीं है। अगर वह बढ़ेंगे भी अच्छा है। अपनी जैसे एक और को बनाने से, प्रकृति कितना संतोष होती है। इसलिए जो भी मेरे पास है, बिना कुछ छुपा कर, वह सभी को बांटने का निर्णय लिया हूँ।

इसलिए आप भी यह याद रखिए, आप भी आत्मा हैं का विषय भूलना नहीं चाहिए। अपने अपने लिमिट में जितना हो सकता है, आत्मा को लाभ पहुंचने वाले ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयत्न करना है। ‘आत्मा हंतको’ मत बनिए।

आध्यात्मिक बीमारी – आध्यात्मिक अनारोग्य ।

भौतिक बीमारी, शरीर संबंधित है। कोई भी बीमारी से शरीर को तकलीफ देगा और वह कुछ भी काम कर नहीं सकता है। अस्पताल में भर्ती होते हैं या अपने घर में ही अपने बिस्तर पर लेटे रहते हैं। अपना अनारोग्य के वजह से अपने हर रोज़ का काम को भी नहीं कर पाते हैं। एक तरह से वह उधर है, लेकिन नहीं है का समान है। ऐसे जब कुछ दिन के लिए वह बीमार हो जाते हैं और ठीक होने के बाद, लोग पूछेंगे कि इतने दिनों से कहां चले गए थे। और वह बोलेगा कि कुछ नहीं है, मैं थोड़ा बीमारी सा हो गया हूं। मतलब भौतिक अनारोग्य है।

वैसे ही आध्यात्मिक बीमारी मतलब आत्मा संबंधित कार्यक्रमों में और आत्मा को लाभ पहुंचने वाले कर्मों में, कुछ दिनों के लिए गायब हो जाते हैं। तब सब लोग पूछते हैं कि क्या हुआ इतने दिन? तब वह लोग कुछ कारण बताते हैं। कुछ भी हो अपना साधना में थोड़ा रुकावट आता है। ऐसे लोगों को आध्यात्मिक बीमारु कहते हैं। यह तीन दिवसीय क्लास को रेगुलर आने वालों को अगर बीच में नहीं आते हैं, उन्हें पूछते हैं कि कहां चले गए हैं? यही आध्यात्मिक अनारोग्य बीमारी है। अगर भौतिक रुप से बीमार होते हैं, शरीर थोड़ा पतला हो जाता है। और वही अगर आध्यात्मिक रुप से बीमार हो जाते हैं तब अपने प्राप्त किया शक्ति को खो जाते हैं।

जैसे शक्ति बढ़ता रहता है उनके कर्मों अच्छा होता है। और शक्ति कम होने से ऐसे कर्मों नहीं कर पाते हैं। क्यों नहीं कर पाते हैं? क्योंकि वह बीमार हो गए हैं। जब शक्ति ज्यादा होती हैं बुद्धि अच्छा काम करता है। और अच्छे निर्णयों ले सकते हैं और अच्छे कार्यक्रमों करते हैं। और आप सिर्फ आत्मा को लाभ पहुंचाने वाले काम ही करते हैं। और आध्यात्मिक रूप से वह लाभ पाते हैं। लेकिन जब शक्ति कम होता है, हर तरफ से आप को नष्ट होता है।

अगर सच्ची में आध्यात्मिक रूप से ठीक होते हैं, तब उनमें शक्ति का विस्फोट होती है। तब उनके मनस शुद्ध होता है और उनके गुण परिवर्तन होता

है। बुद्धि विकसित होता है और विवेक होता है। और हर एक विषय का विचारण कर सकते हैं। श्री रमण महर्षि जी और श्री आदि शंकराचार्य जी भी कहते हैं विचरण करने को, है ना?

तब कौन लोग विचारण कर पाते हैं? जिसके पास विवेक है। और किसके पास विवेक होता है? जिसके पास बुद्धि विकसित है। और किसको बुद्धि विकसित होगा? जिसका मनस शुद्धिकरण हुआ है। और किसका मनस शुद्ध होगा? जब शक्ति बढ़ेगा।

जैसे भौतिक बीमारी में आप दुबला पतला होते हैं, वैसे ही आध्यात्मिक बीमारी में आपका शक्ति कम होती है। इसलिए एक स्थाई पहुंचने तक आपको अंतराल नहीं देने को कहता हूं, क्यों कि आपका पाया हुआ शक्ति को नहीं खोने के लिए।

अभी हाल ही में हमने एक स्पिरिचुअल रिसर्च का स्पेशल क्लास रखे हैं। कारण यही है कि आपको शक्ति बढ़ाने के लिए। जितना ज्यादा शक्ति बढ़ेगा, आप अच्छा रिसर्च कर सकते हैं। किसी चीज के लिए किसी के पास जाने की कोई जरूरत नहीं है। सब कुछ आप ही जानेंगे और आप ही दूसरों को बता सकते हैं। जब पत्री जी पहले पहले में परिचय हुआ था, मैंने उनसे बहुत संदेह पूछता था। कुछ वह बताते थे, लेकिन जब मैं ज्यादा ही पूछता रहता था, उन्होंने कहा कि आपका परिस्थिति ऑक्टोपस जैसे हो गया है।

ऑक्टोपस को बहुत सारे टांगे होते हैं और उनको मालूम नहीं होता है कि कौन सा टांग कहां रखे हैं। तब उसने मेरे परिस्थिति भी ऐसा ही है करके बताया है। जब बाद में मैंने ज्यादा पूछने लगा, उन्होंने कहा कि आपका स्थाई को बढ़ाइए, तब खुद को समझ आएगा। तब से मैंने प्रश्न पूछना बंद किया और उनका संदेशों को अच्छी तरह सुना, किताबें अच्छी तरह पढ़ना, और साधना को ज्यादा बढ़ाना किया है।

उनसे पूछने के लिए कुछ प्रश्नों का लिस्ट बनाया है। लेकिन 6 महीने के अंदर अंदर ही इन सारे प्रश्नों का मुझे समाधान मिल गया है। अगर आज आप आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएंगे हमारे सारे प्रश्नों का समाधान, खुद ही मिलेगा।

जो आध्यात्मिक रिसर्च करते हैं बहुत-सी प्रश्नों का समाधान मिलता है। इसलिए इस मार्ग में अगर भीमावरम क्लास को छोडेंगे, यह ज़ूम क्लास में नहीं आते हैं, मतलब आप को आध्यात्मिक बीमारी हो गया है। इसलिए हर समय आपको आध्यात्मिक रूप से ठीक होना चाहिए। अगर भीमावरम आते हैं, ध्यान में अच्छा पकड़ आएगा और बुद्धि विकसित होगा। अगर ज़ूम क्लास में आते हैं तब आपका ज्ञान अच्छी तरह बढ़ेगा। बुद्धि और ज्ञान जब होते हैं तभी परिपूर्ण मानव बन सकता है।

बच्चों को कभी-कभी हम डांटते हैं कि, आपको बुद्धि और ज्ञान नहीं है क्या? करके, जैसे कि हम में हैं! अगर आपको बुद्धि और ज्ञान होना है तब आपको आध्यात्मिक रूप से ठीक होना है। मतलब आप का गुण मैं परिवर्तन आना है। मतलब किसी मानव को भी तमो गुण से रजो गुण में आने के लिए 100 से 150 जन्मों लगते है। और रजो गुण से सात्विक गुण में आने के लिए फिर से 100 से 150 जन्मों लगते हैं।

लेकिन हर महीने भीमावरम क्लास में आकर, अगर ज़ूम क्लास में आते हैं, तब आपको प्राप्त किया शक्ति से, आपका ज्ञान से कुछ महीनों में आपके गुण में परिवर्तन आता हैं। जैसे पत्री जी का बोध किया 18 आदर्श सूत्रों में 12-वां सूत्र, 'हर कोई ध्यानी ही नहीं रहना चाहिए, मास्टर बनना चाहिए' कहा था। मास्टर का मतलब सिर्फ ज्ञान को बढ़ाना ही नहीं, ज्ञान को बोध करना भी चाहिए। बल्कि सिर्फ अनुभवों को बताना नहीं। जब हम आध्यात्मिक रूप से ठीक होते हैं, तभी यह सब सही कर पाते हैं।

इसलिए मैं पहले से ही कह रहा हूं कि जानना अलग है, और आचरण करना अलग है। क्योंकि जो जानता है वह बताता है। और जो बताया गया विषय को समझता है, वह आचरण कर कर लाभ पाते है। इसलिए जानना महान नहीं है, जो आचरण करते हैं वही महान है। यह जानिए ।

इसीलिए हम जो भी आत्मा है और जो आत्मा का लाभ के लिए नहीं कृषि करते हैं और अपने जीवन भर सिर्फ शरीर के लाभ के लिए कृषि करते हैं, उन्हीं को "आत्मा हंतकों" कहते हैं। यह विषय जानना चाहिए।

आत्मा का लाभ के लिए सोचिए!

अगर पूरा जीवन में अपना आत्मा के बारे में नहीं सोचेंगे, या आत्मा के लिए आप अपना समय उपयोग नहीं करेंगे, या आत्मा के बारे में नहीं जानेंगे, ऐसे लोगों को योगियों ने 'आत्म हंतकों' कहते है।

क्योंकि हम सब आत्माएं हैं। आत्माएं जो हैं, हम सब इस पृथ्वी पर आते वक्त, मतलब मां के गर्भ में प्रवेश करने से पहले, ऊपर लोकों में कुछ निर्णयों लेकर आते हैं। ऊपर लोकों में सिर्फ आत्माएं रहते है, शरीर नहीं होता है। इसलिए निर्णयों लेने वाला सिर्फ आत्मा ही है!

ऊपर लोको में जाती, मज़हब, प्रांतीयता जैसे कुछ नहीं होता है। जब आत्मा ऊपर लोक में रहता है, शरीर के बारे में सोचता नहीं है। सिर्फ आत्मा अपने लिए ही सोचता है। और अपना लाभ के लिए ही देखता है। अपना उन्नति के लिए, अपना बढ़ोत्तरी के बारे में ही, आत्मा को चाहिए।

उस आत्मा को किस देश में जन्म लेगा, किस मजहब में जन्म लेगा, किस जाति में जन्म ले गा, या किस परिवार में जन्म लेगा, या स्त्री या पुरुष के शरीर में जन्म लेगा, यह सब बातें तब उन्हें मालूम नहीं है। आत्मा, अपने चुने हुए कर्मों के आधार जन्म लेता है, तभी कैसे शरीर लेना है, वह निर्णय करते हैं।

वहां पर सारे जो निर्णय लेते हैं आत्मा अपना बढ़ोत्तरी के लिए ही होंगे, और आत्मा का लाभ के लिए ही होते हैं। इसीलिए ऐसे निर्णयों लेकर, पृथ्वी पर आत्मा आता है। इसके हिसाब से ही जन्म लेता है, लेकिन जन्म लेने के बाद यह सभी बातें भूल जाता है।

जन्म लेने के बाद शरीर रहता है और शरीर के साथ-साथ मनस भी होता है। यह मनस, आत्मा के ऊपर एक परत बनता है। जब मनस आत्मा के ऊपर लपेटता है, तब से आत्मा को शासन करता है। तब तक 'मैं', 'मैं' करने वाला आत्मा, पीछे रह जाता है। एक नया 'मैं' , मनस, शुरू होता है। और बाद में, सब मनस के इच्छा से चलता है।

यह मनस, इस दुनिया में आने के बाद ही आता है। उस ऊपर लोकों के बारे में मनस को कुछ मालूम नहीं है। इस मनस को सिर्फ इस दुनिया के बारे में ही मालूम है।

शुरुआत में अपना माता पिता के प्रभाव इस मनस पर पड़ता है। बचपन में जो भी प्रभाव में रहता है, मरते दम तक वहीं रहता है। जिस परिवार में पैदा होते हैं उसी परिवार को अपना समझता है। जिस जाती में पैदा होते हैं, उसी को अपना मानता है। किसने बताया किस जाति? किस मज़हब ? अपना माता पिता बताते हैं। बच्चा, पूरा अपनी मां को ही अनुसरण करता है।

यह हमारा जाती है, यह हमारा मज़हब है, सिखाती है। हिंदुओं तो बचपन से मंदिर को जाकर मूर्तियों को दिखाकर कहते कि, यही हमारा भगवान है। अगर आपको कुछ कष्ट होता है, दोनों हाथों मिलाकर नमस्कार करते हुए, उनसे प्रार्थना करने से आपका पूरा कष्टों, वह निकाल देता है। यही अगर इसाई लोग है तो, चर्च को जाते हैं। वहां भी प्रभु को भगवान मानते हैं और अगर आपको कुछ कष्ट होता है उन्हें प्रार्थना करने को कहते हैं। अगर वही मुसलमान है तो मस्जिद को जाते हैं। हर रोज ट्रेनिंग देने के बाद, ऐसे ही तैयार होते हैं नहीं तो कैसे होंगे ?

मेरा यह मज़हब है, मेरा यह जाती है, या परिवार है, ऐसे सोच तीव्रता से रह जाते हैं। पत्री जी जैसे गुरु आकर, आप शरीर नहीं हैं आप आत्मा है, कहने पर भी नहीं सुनते हैं। जो भी हमारे क्लास में आते हैं, और जब पूछेंगे तो आप कौन हैं? मैं आत्मा हूँ करके बताते हैं, लेकिन क्लास खत्म होने के बाद शरीर जैसे ही जीते हैं।

पूरी तरह से यह प्रपंच ऐसे ही रहेगा का समझकर जीते हैं। यह प्रपंच तो असली थोड़ी है? यह माया प्रपंच है। मतलब रहने जैसे होता है लेकिन रहता नहीं है। और जो नहीं है, वह होता है जैसे दिखते है। बचपन से ‘मैं’ और ‘मेरा‘ जो मानते हैं, मरते दम तक वह आप छोड़ेगे नहीं। यही ‘मैं’ और ‘मेरा’ जब तक नहीं छोड़ेंगे, तब तक, ‘मैं आत्मा हूँ’, को नहीं जानेंगे और दुख नहीं जाएगा।

इसीलिए पत्री जी ने क्या कहा? ‘मैं’ और ‘मेरा’ को निकालने को।

मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरी पत्नी, मेरा पति। असलियत में यह सब लोग कौन हैं? आप आत्माएं हैं। जो भी अपने को शरीर मानते हैं, उन्हीं लोगों को 'मैं' और 'मेरा' होते हैं। जब तक 'मैं' और 'मेरा' निकलेंगे, तब तक आत्मा स्थिति नहीं पहुंचेंगे। मेरा संपत्ति, मेरा धन, यह सब रहते हैं ।

'मैं' और 'मेरा' को क्यों छोड़ना चाहिए? तभी आप आत्मा जैसे जिएंगे और आप आत्मा स्थिति पाएंगे, तभी मोक्ष मिलेगा। आत्म स्थिति में रहने का मतलब आप जो भी करते हैं, जो भी बात करते हैं, आत्मा जैसे ही रहना चाहिए। हर समय आत्मा के लाभ के लिए ही काम करना चाहिए। और आत्मा जैसे ही जीना चाहिए। तभी आप 'मैं' और 'मेरा' को छोड़ना समान होगा।

असलियत में इस माया प्रपंच में 'मैं' और 'मेरा' कहां हैं? मनस हर वक्त क्या कहता है? जो भी नहीं है वह दिखता है, और वही चाहता है। और जो आत्मा सच में है, उनके बारे में कुछ मालूम नहीं है। जो भी मनस चाहता है, वो सब नहीं रहने वाले हैं। सिर्फ आत्मा ही रहता है। और वही, मनस को मालूम नहीं है।

मनस को नित्यमय आत्मा के बारे में मालूम नहीं है। सिर्फ अनित्यमय प्रपंच के बारे में जानता है। इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने क्या कहा है? ध्यान प्राप्त करने से पहले, नित्य और अनित्य वस्तु विवेक होना चाहिए। किसी को भी पहले यह विवेक होना चाहिए। मनस का प्रभाव कितना समय तक होता है, उतना समय तक का अनित्यमय चीजों के पीछे पड़ता है। उसी भ्रम में रहते हैं। जब मनस का प्रभाव कम होता है, तब नित्यमय आत्मा के बारे में जानेंगे। अभी हम सब लोग यही काम कर रहे हैं।

इसलिए जानिए कि ऊपर लोकों से पृथ्वी पर आते वक्त हम आत्मा लाभ के लिए ही निर्णय करते हैं। यहां आकर सब भूल जाते हैं। और आत्मा के बारे में, आत्मा लाभ के बारे में कुछ नहीं करते हैं। और उसके बारे में सोचते नहीं हैं। बहुत लोगों, आत्मा है या नहीं? भी पूछते हैं। और पूरा जीवन जीने के बाद भी आत्मा को परवाह नहीं करते हैं। इन्हीं लोगों को 'आत्मा हंतकों' कहते हैं।

जब पत्री जी जैसे लोगों इस पृथ्वी पर आते हैं, तभी हम जानते हैं कि, मैं यह शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ।

आत्मा के बारे में जानना ही आध्यात्मिकता है। अगर आप आत्मा के बारे में जान रहे हैं, मतलब आप आध्यात्मिकता में आ चुके हैं। लेकिन विचित्र की बात क्या है? बहुत लोग इस आध्यात्मिकता में आने के बाद भी बीमार हो जाते हैं। वह लोग कुछ साल के लिए ध्यान करते हैं, और बाद में छोड़ देते हैं। जानते हुए भी, वह लोग ज्ञान को प्राप्त नहीं करते हैं।

जब शारीरिक रूप से आप बीमार हो जाते हैं, तब अस्पताल में जाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार इस आध्यात्मिक मार्ग में अगर आप बीमार होते हैं, वह लोग आत्मा के बारे में, आत्मा का लाभ के बारे में कुछ नहीं सोचते हैं।

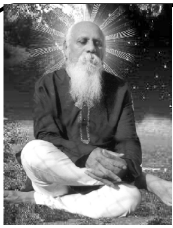

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुध्द करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुध्द होने के कारण कर्मों का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

आत्मा हंतकों मत बनिए ।

हम लोग योगेश्वरों के संदेशों बहुत बार कह चुके हैं। वह सामान्य नहीं है, बहुत आलोचना करने वाले हैं, विचार करते हुए अर्थ को समझना चाहिए। सिर्फ उन्हें सुनकर छोड़ना नहीं चाहिए। वह टाइम पास के लिए नहीं है।

अगर हमारे जीवन में कुछ अतुल्य क्षणों हैं, वह इसी ज़ूम कार्यक्रम में भाग लेने वाले समय ही है।

इसलिए हम लोगों 'आत्मा हंतकों' नहीं बनना चाहिए।

मतलब जो अपने जीवन काल में आत्मा को परवाह नहीं करता है, और आत्मा के बारे में कुछ नहीं करता है, और आत्मा के बारे में सोचता नहीं है, असलियत में मै आत्मा हूँ का विषय भी नहीं जानता है, ऐसे लोग, इस पृथ्वी पर जितने भी बड़ा महान कर्म करें, या हासिल करें, वह लोगों 'आत्मा हंतकों' बनते हैं। यह बात योगेश्वरों कहते हैं।

इस प्रकार अगर हमारे जीवन में आत्मा के बारे में कुछ कर रहे हैं या नहीं? हम लोग सुबह जूम क्लास में भाग ले रहे हैं, बाद में भीमावरम में तीन दिवसीय शिक्षणा शिविर में आ रहे हैं। बाकी समय अगर आप आत्मा के बारे में कुछ नहीं करते हैं तो पूरा बेकार हो जाता है।

आत्म कार्यों करने वाले हमें देखकर...... यह लोग पूरा अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, समझते हैं। लेकिन वह लोग ही बेकार काम कर रहे हैं,का विषय अपने जीवन में यह बात अब नहीं पता लगेगा, मरने के बाद उन्हें मालूम होगा।

बहुत लोग अपने आप को, बहुत पाया है, बहुत कुछ हासिल किया है, बहुत महान कार्यक्रम किये हैं, करके प्रशंसा करते हैं। ऐसे ही कुछ लोग इस पृथ्वी पर करोड़ों कमाकर, बहुत बड़े बड़े पदों प्राप्त कर कर, महान पढ़ाई कर केIAS, IPS बनते हैं। यह सब देखकर अपने में अहंकार से भर जाते हैं। मेरे से ऊपर कोई नहीं है, मैं ही बहुत बड़ा महान कार्यक्रम कर रहा हूँ, करके अहंकार रहता है।

लेकिन विचित्र की बात क्या है? अपने पूरे जीवन में जो भी कष्ट कर

कर हासिल किया है, कमाया है, प्राप्त किया है, यह अवार्ड, या कुछ भी, कोई भी काम नहीं आता है और साथ में भी नहीं आता है। सिर्फ और सिर्फ आत्मा ही ऊपर जाता है। जो इस शरीर को 'मैं' समझता था, वह जलाते हैं। तब उन्हें मति भ्रमित हो जाता है। मैंने इतना महान बना, इतना महान कार्य कियां हूँ, इतने हजारों लोगों से मैं ही महान समझता था, वह सारे करोड़ों रूपए नहीं आए हैं, और सारे पदों नहीं आए हैं, वह सारे अवॉर्ड नहीं आए हैं, यह कुछ भी मेरे साथ नहीं आया है क्या? करके आश्चर्यचकित होता है!

क्या मैंने इस जीवन में जो भी कमाया है, जो भी पाया है, सब बेकार है? करके बहुत उदास होता है और आश्चर्य होता है। और पूछता है कि असलियत में वह जो जलाए हैं, उस शरीर 'मैं' नहीं हूँ क्या? लेकिन वो ही 'मैं' समझकर बहुत खुश हुआ था, बहुत सुखी रहा था, बच्चों से, अपने रिश्तेदारों से बहुत बड़ा जीवन जीता था, समझ रहा था। लेकिन वह सभी वही रह गए हैं! करके दुखित होता है।

ऐसे ऊपर जाकर सोचता है। कितना पागल था मैं! जो चीज मेरे साथ नहीं आते हैं दिन रात कष्ट कर कर बहुत कुछ पाया हूँ करके खुश रहता था, महान समझकर गर्व रहता था। अभी उस में एक भी चीज़ नहीं है। असलियत में मुझे क्या लाभ देता हैं, क्या मैंने एक भी कार्य किया हूँ या नहीं? करके सोचता है। मुझे, मतलब मेरे आत्मा को, लाभ करने वाला एक भी विषय नहीं दिखता है।

करण यही है कि अब तक शरीर को 'मैं' समझता था। अब उन्हें साफ-साफ मालूम हुआ है कि इस शरीर 'मैं' नहीं हूँ। मैंने इस शरीर के लिए जो भी किया हूँ, पूरा बेकार है। जितना समय शरीर को दिया है वह सब पूरा बेकार हो गया, का बात समझ आता है। जब मैं जीवित था, किसी को जब वह ध्यान करते देखा और आंखें बंद कर कर बैठने वालों को, मैंने पागल समझा था। क्या यह बात बात पर आंखें बंद कर बैठ्ते हैं? कुछ काम तो कर सकते थे ना? लेकिन मैं ही पागल था कि मेरा पूरा समय बेकार कर कर आया हूँ। इस विषय का समझ आता है।

कोई भी जब बच्चे ध्यान करते हैं, कुछ माता पिताओं उन्हें डांटते हैं कि, कितना समय आप वैसे आंखें बंद कर कर बैठेंगे? थोड़ा पढ़ाई कर सकते हैं ना? ताकि आप अच्छा रैंक पा सकते हैं, और अच्छा उद्योग प्राप्त कर सकते हैं, और आप अच्छी तरह से जी पाएंगे। कोई भी ध्यान को प्रोत्साहन नहीं करते हैं। उनको बस पढ़कर अच्छा सा उद्योग पाने से, वही महान कार्य समझते हैं।

लेकिन शरीर छोड़ने के बाद, क्या मैंने उन्हें विमर्श किया, गलत किया हूँ, पागल समझता था। जब वह लोग आंखें बंद कर कर बैठने से मेरा काम ही महान समझता था। मतलब उन्हीं लोगों का काम ही सही है। मैंने जो किया है वही पागलपन है, तब उन्हें समझ आता है और आश्चर्यजनक होता है। कितना मूर्ख था, मैं आत्मा हूँ का विषय कोई भी मुझे बताया नहीं ! करके सोचता रहता है।

हम जैसे लोग अगर किसी को बताते हैं, कि आप शरीर नहीं हैं, आप आत्मा हैं, तब वह कहते हैं कि मैंने **IAS** पड़ा हूँ, आप क्या मुझे बताएंगे? मैं डॉक्टर हूँ, स्पेशलाइजेशन भी किया हूँ, मुझे कुछ मालूम नहीं है क्या? मुझे सब कुछ मालूम है, मैं ही बहुत बड़ा महान पंडित हूँ, मैंने बहुत लोगों को उपन्यास किया हूँ, आप क्या मुझे समझाएंगे? ऐसे कहते हैं। मैं मिनिस्टर हूँ, आप सामान्य है, आप मुझे क्या बताएंगे? ऐसे कहते हैं। यह सारे पागल लोग जब शरीर छोड़ते हैं तभी समझेंगे। हां! वो लोग ही सही थे। जो भी कहते हैं, उन्हें पागल समझता था, लेकिन असलियत में मैं ही पागल हूँ, तब सोचता है।

बिना कुछ पैसे कमाना, बिना भोगों अनुभव करना, सामान्य जीवन बिताना, क्या यह जीवन है? उन से बड़ा पागल कोई होगा क्या? ऐसे कर के पृथ्वी पर समझते थे। अभी भी हम सबको देकर जरूर ऐसे ही समझते होंगे। अपने रिश्तेदारों, हमारे परिवार वालों को क्या मालूम है? हम जो काम कर रहे हैं।

पिछले दिनों में मेरा पोता का शादी हुआ था। उसके लिए एक दो बार आना जाना पड़ा । ऐसे ही उनको अपना मुंह दिखाकर, जब सब लोग उस समारोह में थे मैंने अपने कमरे में चला गया। मेरे पास अपना मोबाइल था मोबाइल के अंदर कुछ पुस्तकों को करेक्शन कर रहता। उनके लिए दिखता है

कि मैं वहां आया हूँ, लेकिन मैं क्या कर रहा हूँ? जो घर पर बैठकर करना था वो यहां कर रहा हूँ। उनको उस विषय के बारे में मालूम नहीं है। उनका अपना काम और मेरा अपना काम।

शादी के कारण मुझे क्यों दो-तीन दिन बेकार करना है? अपना समय को बेकार नहीं करना है। ऐसे ही जब मुझे ऊब होता है, यह काम करने से मैं थोड़ा रिलैक्स हो जाता हूँ। एक विषय को याद रखिए, आत्मज्ञानियों को प्रापंचिक कार्यों के लिए अपना समय को बेकार नहीं करना है। आत्मा कार्यों ही करना है और आत्मा के लाभ के लिए ही काम करना है।

हमारे लोग, अगर इनके बंधुओं के घर में कुछ शादी होता है, कम से कम 15 दिनों या एक महीने तक, यह सारे कार्यों को छुट्टी दे देते हैं। अगर हम पूछते हैं क्यों ? तब वह कहते हैं कि मेरी बहन की बेटी की शादी, या मेरे भैया का बेटा का शादी। इसलिए मैं नहीं आ पाया हूँ। मतलब अभी भी, लोगों को इस मार्ग में आने के बाद भी, उनको समझ में नहीं आ रहा है कि यह सब कितना महान कार्यों कर रहे हैं।

सुनते सुनते समझ में आएगा। ऐसे संदेशों को सुनते होंगे तो जरूर उनमें परिवर्तन आएगा। इसलिए याद रखिए कि अगर आप एक पूरा जीवन काल में अगर आत्मा को परवाह नहीं करते हैं, आत्मा के लिए कुछ नहीं करते हैं, आत्मा का लाभ के बारे में लापरवाही रहते हैं, आप जरूर 'आत्मा हंतक' ही हैं।

अभी यह बात आपको समझ नहीं आएगा। बहुत लोग हर रोज़ सुबह एक घंटा, शाम को एक घंटा बैठ रहे हैं करके कहते हैं। यह लोग बैठे हैं आत्मा के लिए? या शरीर के लिए? उनको समझ नहीं आता है। इसलिए कहता हूँ कि सांगत्य रहना चाहिए। सज्जन सांगत्य का मतलब, सत्य के बारे में जो कहने वाले हैं, उनका सांगत्य। सत्य का मतलब आत्मा, आत्मा के बारे में, आत्मा का लाभ के बारे में, आत्मा उन्नति के बारे में, आत्मा के बढ़ोतरी के बारे में, आत्मा को ऊपर लोकों को प्राप्त करने के बारे में, जो भी कह सकते हैं, उनका सांगत्य ही सज्जन सांगत्य कहते हैं। ऐसे टाइम पास वाले बातों करने से सज्जन सांगत्य नहीं होता है।

इसीलिए हम लोग 'आत्मा हंतकों' नहीं बनना चाहिए। अब देखिए,

कोई भी ऑफिसर हो या जितने भी महान कार्यों करते हैं, कितना भी बड़ा मिनिस्टर हो, अगर उनको एक दुर्घटना हो गया और पैर टूट गया, नहीं तो कुछ और हो सकता है। एक महीने यह दो महीने या तीन महीने, शरीर संबंधित कार्यक्रम नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को बीमारू कहते हैं।

ऐसे ही अगर आप लोग भी कोई कारण से एक शादी में या उस समारोह में, या उस कार्यक्रम में, इस ध्यान और ज्ञान कार्यक्रमों को अगर आप छोड़ते हैं, तब समझिए कि आपको आध्यात्मिक बीमारी हो गया हैं। एक महीने, दो महीने छोड़ देते हैं। ऐसे बहुत सारे लोग हैं। पहले छोड़ देते हैं, 15 दिनों बाद में जुड़ जाते हैं। कुछ लोग तीन महीने या छः महीने के बाद भी जुड़ने वाले हैं ।

और जो लोग अस्पताल जाते हैं, वह एक हफ्ता रहते हैं, या कुछ लोग एक महीने तक रहते हैं, और कुछ लोग 6 महीने तक रहते हैं। हर समय स्वास्थ में रहकर अपनी सारे कार्यों को करने वाला को उत्तम स्वास्थ्य कहते हैं। कभी भी विराम नही देकर अपना इस आत्मा के लाभ के लिए कार्य करने वालों को आध्यात्मिक स्वास्थ्य कहते हैं। आध्यात्मिक स्वास्थ्य जिसके पास है वह कभी विराम नहीं देता है। जब विराम देंगे उन्हीं को आध्यात्मिक बीमारी हो गया है, कहते हैं। आप किस स्थिति में हैं खुद ही जानिए।

कुछ लोग सोचते होंगे कि इस सुबह ज़ूम क्लास में बहुत सालों से आ रहा हूँ, और क्या आना है? इसमें क्या है? वह लोग पागल हैं! इतने सालों से आ रहा है, मतलब थोड़ा सा ध्यान तो प्राप्त किया है ना? यह बात समझ नहीं पाते हैं। वह इतने सारे विषयों बता रहे हैं, इनमें से कुछ भी मैं आचरण कर रहा हूँ क्या ? करके सोचते नहीं है।

और अभी मुझे क्यों आना है। इतने सालों तक मैं गया हूँ। काफी है ना? करके सोचते हैं। क्या यह काफी है ? जैसे बुद्ध बन गए हैं, एक विवेकानंद बन गए हैं, नहीं तो एक शंकराचार्य जी हो गए हैं। आध्यात्मिक बीमारियों मत बनिए। कभी भी 'आत्मा हंतकों' नहीं बनना है।

योगेश्वर का मतलब क्या है ?

योगेश्वर मतलब कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। बहुत महान स्थिति पहुंचने वाला व्यक्ति है। ऐसे लोगों को श्रीकृष्ण जी ने पंडित कहा है। पंडित का मतलब ज्ञान में पका हुआ है, मानवों में सबसे बड़ा महान है, समस्त को जानने वाला है, समस्त ज्ञान को हज़म (वर्षण) किया है। ऐसे लोगों को योगेश्वर कहते हैं। ऐसे योगेश्वर को श्री कृष्ण जी पंडित कहते हैं।

योगेश्वर कितना महान है कि, एक बार हम जब वैजाग के पास अराकु प्रांत में पत्री जी के साथ ट्रेकिंग के लिए गए हैं। मैं और मेरी मैडम दोनों साथ में गए थे। एक संदर्भ में मैं पत्री जी के साथ में अकेला चल रहा था। उस समय मैं पत्री जी से कहा था कि, मैं समझ रहा हूं कि आप बहुत महान योगी है।

तब उसने बताया कि मैं योगी नहीं हूं.... योगेश्वर हूं, ऐसे मेरे बात को ठीक किया है। तब तक तो मैं योगी ही महान समझता था, लेकिन जब पत्री जी के मुंह से उस शब्द को सुना हूं, तब मुझे समझ आया है कि सारे योगियों से भी महान है, एक योगेश्वर है। तब उनके बात सुनकर मुझे उनका स्थाई कितना है का समझ आया है।

सहज बात है कि अपनी महानता के बारे में खुद नहीं बताते हैं। लेकिन मेरा मानना है का बात गलत है, को विवरण देने के लिए ही, पत्री जी ने वह बात बताया है। तब मेरे नज़र में उनका गौरव और ज्यादा बढ़ गया था, और उनके बातों पर और ज्यादा श्रद्धा रखना शुरू किया हूं।

ऐसे उसके मुंह से जो बात निकला है मुझ में बहुत परिवर्तन आया है, और उनके ऊपर भक्ति बढ़ गया था, और उनके सारे बातों पर मेरा श्रद्धा बढ़ गया था। उसके एक ही शब्द से मेरा साधना और कठोर हो गया, मेरे सारे प्रपंचिक विषयों पर दिलचस्पी कम हो गया। यही एक बात से इतने सारे बदलाव मुझ में आया है।

यह सभी आध्यात्मिकता में बढ़ने के लिए बहुत उपयोग हुआ है। इसलिए योगेश्वर का संदेश हम कह रहे हैं, इसलिए योगेश्वर कितना महान है

हमें जानना चाहिए। जैसे वशिष्ट महर्षि हो, या व्यास महर्षि हो, या बुद्ध भगवान हो, या श्री कृष्ण जी हो, या पत्री जी हो, उनके महानता थोड़ा सा ज्ञान होने वालों को समझ आता है।

जिसके पास ज्ञान नहीं है उनको कमियां ही दिखाई देते और जब कमियां देखते हैं, योगेश्वर भी सामान्य मानव जैसे दिखते हैं। लेकिन उनके महानता समझ सकते हैं तो, जानेंगे कि वह लोग किस स्थिति में हैं। योगेश्वर मतलब अनंत ज्ञान होने वाला, अपार बुद्धि होने वाला। उनका ज्ञान अनंत है । उनके अंदर से अपने आप ही ज्ञान आता ही रहता है।

वह लोग कितना भी विषय कहते रहते हैं, और दूसरे नया कोण से भी बताते रहते हैं। उसी को अनंत ज्ञान कहते हैं। ऐसे लोग जो भी विषय को पकड़ते हैं, वह पूरा एक बड़ा सब्जेक्ट बन जाता है। इसलिए मैं, जब भी पत्री जी आते थे, अपनी जेब में जरूर एक किताब और कलम रखता था। पता नहीं कहां कब एक नया शब्द निकले उनसे, तुरंत उसको मैं किताब में लिखता था।

ऐसे लगभग 100 किताब हो गए हैं। जब मैं पुस्तक लिखता हूं, यह सारे किताबों को देखता हूं। उनमें से कुछ पुंक्त लिखता हूं। मेरे अपने लिखे हुए किताबों में बहुत सारे विषयों हैं।

वह आसान भाषा में कहते हैं। उनमें से एक या दो पुंक्त लेकर एक विषय को तैयार करता था। उसने दिया हुआ एक ही पुंक्त को पकड़कर, उनके उदाहरण देते हुए और उपमानों देते हुए, विवरण देता रहता हूं। वही एक विषय बन जाता है। इसीलिए मेरे पुस्तकों में विषयों दो या तीन पन्ने से ज्यादा नहीं होता है।

आप जितना भी करो, कुछ भी करो, कुछ भी कमाओ, और कुछ भी इकट्ठे करो, आप जब शरीर छोड़ते हैं इन सब को छोड़कर ही जाना पड़ेगा। लेकिन आपने जो ज्ञान प्राप्त किए हैं, वही आपके साथ आएगा। यह जानिए।

पत्री जी ने जैसे कहा है कि योगेश्वर है, या श्री कृष्ण जी जैसे कहा पंडित है, या बुद्ध भगवान जैसे कहा उत्तम पुरूष है, यह सभी एक ही है।

व्यास भगवान ।

'ब्र्मा आदि देवताओं अपने-अपने अर्हत के हिसाब से, और बिना रहा भेदों से इस परब्र्म स्वरूप आनंद सागर से ही अनुभव पा रहे हैं', यह जानना चाहिए।

इससे हमें कुछ विषयों को अर्थ जानना चाहिए। ब्र्मा आदि देवताओं मतलब यह सभी देवी देवताओं अपने-अपने अर्हत से ही आनंद सागर परब्र्म से अनुभव पा रहे हैं, यही कहा गया है।

मतलब सागर जैसा आनंद स्वरूप ही परब्र्म है। यहां पर हमें समझना है कि ब्र्मा आदि देवताओं से भी बड़ा महान परब्र्म है। यह बात उपनिषदों में कहा गया है।

सहज बात है कि मानव लोगों को देवी देवताओं महान लगते हैं लेकिन उनके पास जो शक्तियां है या ज्ञान है या वह जो आनंद पाते हैं अपने-अपने अर्हत के हिसाब से, उस परब्र्म से ही पाए हैं। इससे मालूम होगा कि परब्र्म कितना बड़ा महान है।

उसी को सच्चिदानंद स्वरूप कहते हैं, सृष्टि करता भी कहते हैं, विश्वात्मा कहते हैं, परमात्मा कहते हैं, पर ब्र्मा कहते हैं, ऐसे बहुत सारे नाम से बुलाते हैं। सृष्टि को जो सृष्टि किया है, और सृष्टि का आधार है, और जो सृष्टि को चला रहा है, उतना महान है। उनके पास सब कुछ है। ऐसे जो भी, जितना भी आनंद प्राप्त करते हैं, या अनुभव कर रहे हैं, इस आनंद साक्षात परब्र्म से ही आया है!

'आत्मा ही परब्र्म' करके हमें पत्री जी ने स्पष्ट किया है। समस्त जीव राशियों में आत्मा रहता है और वही परब्र्म, का विषय हमें जानना है। मतलब हमारे सारे शरीरों के अंदर जो आत्मा है वह परब्र्म जैसे महान है। उस आत्मा ही आनंद सागर है।

उतना आनंद हर एक के शरीर में है। उतना आनंद अपने शरीर में ही रख कर मानव लोग हर समय दुखी रहते हैं, बाधा में रहते हैं, रोते रहते हैं, अशांति हो जाते हैं, और सोचते कि यह जीवन किस लिए हैं! कितना विचित्र की बात

है?

यह लोग जो आनंद चाहते हैं, वह अपनी ही शरीर में है। अनंत होने से भी उनको अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। और दुख को ही अनुभव कर रहे हैं। उपनिषद में कहां गया है, कि अपनी-अपनी अर्हत के हिसाब से, मतलब, किसी एक को ज्यादा होगा, और किसी को कम होगा। सागर में पानी की कमी है क्या? उसी तरह परब्र्म्म के पास आनंद का कमी है क्या?

आप समुंदर के पास जो पात्र लेकर जाते हैं उतना ही पानी मिलेगा। अगर एक ग्लास लेकर जाते हैं तब उसी में पानी लेकर आएंगे। अगर एक बड़ा ड्रम लेकर जाते हैं या एक टैंकर लेकर जाते हैं उतना ही पानी लेकर आ सकते हैं। जो भी पात्र आप लेकर जाते हैं उसके हिसाब से मिलता है। आप जितना भी बड़ा पात्र लेकर जाएंगे, समुंदर तो घटता नहीं है, और जितना चाहो उतना आप पा सकते हैं।

तब अपना शरीर में से उतना महा आनंद को कैसे पाना है? उस आनंद पाने का मार्ग ही हमें पत्री जी ने दिया है, 'श्वास पर ध्यास' ध्यान। जो भी यह ध्यान करता है, पहले पहले में उनमें सारे आलोचनाएं रूक जाते हैं, चंचल मनस निश्चल हो जाता है। और आगे साधना करते-करते उनका निश्चल मनस निर्मल हो जाता है। मतलब शुद्धि हो जाता है अर्थात अच्छा बन जाता है।

और आगे आप ध्यान करते रहेंगे तो निर्मल मनस शून्य हो जाता है। जब यह मनस शून्य होता रहता है, आनंद सागर से आपको आनंद मिलता रहता है। मतलब आनंद को अनुभव पाते रहते हैं। मनस जितना शून्य होता रहता है, आप उतना ही आनंद प्राप्त कर सकते हैं, और अनुभव कर पाते हैं।

यहां पर अर्हत कैसे मिला? अपना अपना साधना से ही। कुछ लोग ज्यादा कर सकते हैं, कुछ लोग कम कर सकते हैं। जितना ज्यादा करते हैं उतना आनंद पाते हैं। कम करने वालों को कम ही मिलेगा। कोई भी हो अपने ही कृषि के आधारित उतना आनंद पाने का अर्हत पाते हैं।

इसीलिए, जीवन दुख होने का नहीं है, बाधा में रहने का नहीं है। अपने ही शरीर के अंदर आनंद सागर से आनंद पाने के लिए, अनुभव करने के लिए, प्रयत्न करना चाहिए।

इसीलिए बालयोगियों ने उतना साधना करते-करते आनंद को अनुभव करते-करते बाहर नहीं आ पाया और बहुत सालों तक वहीं रह जाते हैं। उनको देखकर सामान्य लोग पागल समझते हैं, लेकिन असलियत में जो पागल समझता है, वही पागल है। वह लोग जो आनंद पाते हैं इन लोगों के पास कहां हैं? यह लोग दुख में रहते हुए ही, दूसरों को पागल समझते हैं। यह लोग इस दुनिया के अल्प संतोष में रहकर, अनंत दुख सागर को अनुभव कर रहे हैं।

इन लोगों को पता भी नहीं है, असलियत में आनंद क्या है। पिछले दिनों में हमारे लोग पूरी रात ध्यान में बैठे हैं। कैसे बैठ पाए हैं? क्योंकि उस आनंद को अनुभूति पा रहे थे। अगर आनंद नहीं होता, दुख में कैसे बैठे रहेंगे? उस स्तिथि तक नहीं पहुंचने वाले, उस आनंद नहीं पाने वाले, ध्यान में अपने आंखें खोलते हैं और उठ कर चले जाते हैं, मेरे से नहीं हो रहा है कहकर।

लेकिन उस स्थिति तक पहुंचने वाले आनंद को अनुभव करते-करते घंटों, मिनिटों जैसे निकल जाते हैं। वह लोग अगला दिन भी बैठने के लिए तैयार हो गए हैं। अभी बहुत सारे लोग ऐसे बैठने को तैयार हो गए हैं।

ऐसे ही उस परब्रह्म से जितना भी आनंद लेलो, लेने के बाद वह घटता नहीं है। इसलिए देखिए कुछ लोग चिरंजीवी कहते हैं। मतलब वह शतक सालों ही नहीं, हज़ारों साल से अपने शरीर में रह जाते हैं, लेकिन वह शरीर के साथ घूमते नहीं है। उस स्थिति में रह जाते हैं। उस आनंद सागर में कई हजारों साल हो गया है करके भी, उन्हें मालूम नहीं है।

देखिए हनुमान जी, या महाअवतार बाबाजी, चिरंजीवियों, वैसे ही जी रहे हैं। ऐसे ही शिव जी भी हर समय ध्यान स्थिति में रहते हैं। अनंतमय उस ज्ञान को और आनंद को वह ऐसे पीते रहते हैं। हम भी उस अद्भुत मार्ग में आए हैं। यह समझकर अपना साधना को बढ़ाइए। लेकिन आंखों खोलकर जीने से सारा दुखमय ही है।

इसलिए आंखों बंद ही नहीं करना, मनस को भी जब बंद करेंगे तभी आनंद सागर आपको मालूम होगा। उस मनस को बंद करने का प्रक्रिया ही हमें पत्री जी ने बोध किया है, 'श्वास पर ध्यास' ध्यान ।

वही काम जो भी भीमावरम आते हैं कर रहे हैं। मैं इसलिए कह रहा हूं कि आप लोग 350 जन्मों पार किए हैं, तभी उतना दिलचस्पी दिखा रहे हैं। इसीलिए वैसे ही हर महीने नहीं आएंगे और इतने घंटों तक नहीं बैठेंगे। लेकिन प्रापंचिक स्थिति में रहने से अशांति, दुखी, समस्याओं, बाधाएं, कष्टों, यह सभी होते हैं। लेकिन ध्यान स्थिति में अगर आप बैठेंगे, तब आप हमेशा आनंद ही अनुभव करते रहते हैं ।

मानव लोग इस दुनिया से संतोष ही प्राप्त करते है, लेकिन आनंद नहीं है। आनंद सिर्फ परब्रम्ह से ही पाना है। और उसका अर्हत अपने साधना के ऊपर आधारित है। जितना साधना तीव्र होगा उतना मिलता रहेगा।

मैंने पत्री जी को देखा है। यह इतना महान कैसे हो गया है? उनको इतना क्रेज़ कैसे आया है? क्यों इतने लोग उनके पीछे पढ़ते हैं? तब मुझे समझ आया है कि, सभी को आनंद पाने का मार्ग पूरा दुनिया में बोध किया है, इसीलिए ही।

हम कहते रहते हैं सुख, संतोष, आनंद। मतलब शरीर से सुख पाते हैं, मनस से संतोष पाते हैं और आत्मा से पाने वाला ही आनंद है ।

ऐसे ही जो बोध करते हैं वही महान बन सकते हैं। हम भी बोध कर रहे हैं, क्यों ना हम भी महान बनेंगे, उसी को मैंने पकड़ा है ।

देखिए पूर्व काल से बहुत मंदिरों में काम चित्रों देखते रहते हैं। हम सोचते थे कि क्या यह मंदिर के ऊपर ऐसे काम चित्र बनाए हैं ।

और कोई जगह नहीं मिला है क्या? ऐसे चित्रों बनाने के लिए! सिर्फ मंदिर में ही मिला है क्या? करके सोचते थे। लेकिन उसके बहुत सारा अंतरार्थ है। एक मानव को सुबह से शाम तक कष्ट कर कर, रात को अपना सहयोगी से संभोग के समय में बहुत आनंद प्राप्त करता है। वह आनंद मामूली सी नहीं है। वह अनिर्वचनीय है, मतलब वर्णन नहीं कर सकते हैं। उसको बता नहीं पाते हैं, उतना आनंद, उतना महान है ।

इसीलिए अपनी पत्नी को पति छोड़ नहीं सकता, और पति को पत्नी छोड़ नहीं सकती है। जितना भी वहां झगड़ा कर ले फिर भी शाम को मिल जाते हैं। इसलिए कि, उसी आनंद को पाने के लिए, अनुभव करने के लिए। विचित्र की बात क्या है कि वह सिर्फ एक क्षणिक होता है, उसी क्षणिक आनंद को पाने

के लिए, एक दूसरे के लिए इतना कष्ट करते हैं। किस लिए? उस क्षण काल संभोग समय के लिए, आनंद के लिए, क्योंकि वह उतना महान है।

ओशो महाशय ने क्या कहा है? आप जो एक क्षणिक संभोग में जितना आनंद मिलता है, उस परब्र्म्ह, मतलब आत्मा, से आपको शाश्वत के लिए आनंद प्राप्त कर सकते हैं। मानव लोग को इस विषय को ना जानकर, सिर्फ संभोग के लिए प्रयत्न करते हैं, लेकिन भगवान को प्राप्त करने का प्रयत्न ही नहीं करता है।

क्योंकि? आत्मा मतलब जो भगवान को पाया है, इस लोक में और कुछ नहीं चाहता है। उस आनंद सागर, अनंत है, और वह उस आनंद, हर एक के शरीर में है। कोई भी उस आनंद पाने के लिए अपने ही शरीर में जाना है। शारीरिक सुखों और सारी भोगों जितना भी अनुभव करें, वह कम ही होगा ।

इसलिए ओशो क्या कहता है? बाहर शारीरिक संभोग में नहीं रह जाना, और अंदर जाकर अपने भगवान को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। यही विषय का कारण है कि सारे मंदिर के ऊपर काम चित्रों बनाए गए हैं।

उसके उद्देश्य यही है कि, जब वह मंदिर के अंदर जाता है, बाहर का उन चित्रों को देखते ही वहीं नहीं रह जाना है, अंदर जाकर उस भगवान को दर्शन करना ही उन चित्रों का संदेश है। इसीलिए पूर्व काल में बड़ों ने मंदिरों के ऊपर ऐसे काम चित्रों को बनाएं हैं ।

सिर्फ मानव ही नहीं, महात्मा ही नहीं, योगियों ही नहीं, ऋषियों भी नहीं, ब्र्म्हादी देवताओं सभी, सारे देव देवी देवताओं सभी अपने अपने अर्हत के आधारित ही, परब्र्म्ह स्वरूपानंद सागर से ही अनुभव कर रहे हैं। यही विषय आपको जानना चाहिए। उपनिषदों में कहा गया है। जो इस को समझते है, सारे विश्व को छोड़ते हैं और सिर्फ भगवन को पाने के लिए प्रामुखता देता है।

पत्री जी इस आनंद मार्ग को दुनिया को बोध किया है, तभी उतना महान बना है। यही मैंने जाना है और वही मैं बोध कर रहा हूं। अपनी शक्ति की अनुसार, अवसर के अनुसार, जितना हो सकता है, उतने लोगों को मुझे बोध करने का मेरा आशा है।

कोई भी यही काम करने से महान बनता है। इससे ज्यादा महान सेवा

कुछ नहीं है। और इससे ज्यादा महान मार्ग कुछ नहीं है। इसीलिए देखिए जो भी गाइडिंग ध्यान, म्यूजिक ध्यान कर रहे हैं, धीरे-धीरे कम हो जाएंगे। अंत में सब लोग 'श्वास पर ध्यास' ही रहते हैं। अगर यह गाइडिंग भी करो या संगीत ध्यान करो, सिर्फ मनस से ही आप पाएंगे ।

मनस के पास क्या है? सिर्फ अशांति होगी, आनंद सागर तो कहां है? आनंद सिर्फ आत्मा के पास है। उसके लिए मनस को पार करना है। और वह काम सिर्फ 'श्वास पर ध्यास' करने से ही होगा। जब 'श्वास पर ध्यास' ध्यान करते हैं उस आनंद का अनुभव पाते हैं। अगर आपको उसकी रुचि मालूम होगा, तब आप ध्यान को कभी नहीं छोडेंगे। अगर आप वैसे ही आंखों को बंद करते हैं, मनस के पास रुक जाते हैं, कुछ दिनों बाद ध्यान नहीं कर पाते हैं। लेकिन जब श्वास पर ध्यास रखकर उस स्थिति तक पहुंच पाते हैं, उस आनंद को अनुभव कर सकते हैं, तब आप बोलेंगे कि इससे ज्यादा इस प्रपंच में मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

'वशिष्ट महर्षि जी'

'यधायाति तधा याति, यद्गच्छति तद्गच्छति'।

इसका तात्पर्य क्या है? 'जो आना है आएगा, जो जाना है जाएगा'।

वशिष्ट महर्षि ना केवल आने वाले विषय के बारे में ही नहीं, जाने वाले विषय के बारे में भी बताया है। यहां पर वशिष्ट महर्षि सृष्टि को हज़म करने वाले है। सृष्टि सिद्धांतों को, सृष्टि धर्मों को, और सृष्टि नियमों को, और सृष्टि में समस्त को जानने वाला है। उनका अनुभव ज्ञान से ही यह बोध किया संदेश है।

उसने कहा है कि 'जो आना है आएगा, जो जाना है जाएगा' ।

याद रखिए कि आप आने वाले विषयों के बारे में क्यों चिंतित हैं। वह कमाने है, यह इकट्ठा करने के लिए, यह बनाना है, उनके पास है, यह सब चिंता क्यों करते हैं? ठीक है उनके पास है। यह नहीं है कि आप को भी आना चाहिए? आप दिन-रात कष्ट करेंगे तो आएगा क्या? कहां से आएगा?

अगर आपको अर्हत होता तब आप एक करोड़पति का बेटा पैदा हुआ होता, या तो एक बेटी। ऐसे क्यों पैदा हुआ है? यह जानना चाहिए। तब आप मुझसे पूछ सकते हैं कि अभी क्या करना है? लेकिन जो आपको करना है वह करिए। पहले जानो कि आप कौन हैं! आपका लक्ष्य क्या है उनको जानो! आपका गम्य स्थान क्या है जानो! उनको हासिल करने का प्रयत्न करिए।

अगर जो भी आपको आना है, तबी आएगा जब आना है। आपको मांगने की कोई जरूरत नहीं है। आपको कुछ चाहने की कोई जरूरत नहीं है। आपको बिना प्रयत्न किए, बिना कष्ट करके, बिना श्रम करके, ऑटोमेटिक खुद-ब-खुद उस समय आपके पास पहुंच जाएगा। आप क्यों चिंतित हो?

वशिष्ट महर्षि का वह बातें सामान्य थोड़ी है? जो आपको नहीं आना है, जितना भी ऊपर नीचे हो जाए फिर भी नहीं आएगा। इसलिए आने वाले विषयों के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए।

उसके लिए आपका समय को बर्बाद नहीं करने का, आपका जीवन,

आपका समय, आपकी शक्ति, आपका बुद्धि, क्यों बर्बाद करते हो? आप क्यों सोचते हो? जो आना है वह तो आ ही जाएगा, अगर आप चिंतित ना भी करे, आप श्रम भी न करें, आप प्रयत्न भी न करें, आपको जो मिलना है वो किसी एक रूप में तो आएगा ही ।

वशिष्ट महर्षि ने स्पष्ट से कहा है कि, 'यधायाति तधा याति' अर्थात 'जो आना है, वह आ ही जाएगा'।

इसीलिए आने वाले चीजों के लिए क्यों प्रयत्न करना है? और जब सोचा था नहीं आएगा, तो आपको क्यों दुखी होता है? यही जब नहीं आता है कितना अशांति है? ऐसा क्यों हो रहा है? अगर आपको अर्हत नहीं है, तो कैसे आएगा? आखिर में आपको दुख मिलेगा। इसके अलावा जो आप सोचते हैं वह नहीं आएगा। वशिष्ट महर्षि का एक ही बात में कितना अर्थ है, समझ लीजिए।

जब इस वाक्य को पढ़ते हैं मामूली समझते हो। लेकिन इसके अंदर कितना अर्थ है। इस वाक्य में सृष्टि का नियम रखा है। असलियत में जीवन आपके हाथों में कहां है? सब कुछ सृष्टि का निर्णय के प्रकार ही होगा। सोचिए कितने करोड़ों बुद्धिमानों और अपर बुद्धिमान लोग इस पृथ्वी से निकल चुके हैं ।

आप भी कितने साल तक रहेंगे? रहना मतलब आपके सारे इंद्रियों शक्तिमय होकर काम करने तक समझो कि आप इस पृथ्वी पर हैं। जब आपका इंद्रियां शक्तिहीन हो जाते हैं, मतलब समझिए कि यह पृथ्वी से निकल चुके। याद रखें कि आप सब लोग इस पृथ्वी पर स्थाई नहीं है, और बहुत कुछ करने को सोचना नहीं है ।

एक मानव जीवन मामूली बात नहीं है। भुक्ती को देखना है, संसार को देखना है, समाज में रहते हुए ही कुछ नियमों को आदर करना है, आपको आप कौन है जानना है, आपका लक्ष्य को जानना है, इतने सारे प्रयत्न करना चाहिए। प्रापंचिक जिम्मेदारियों के साथ अपना लक्ष्य को भी हासिल करना है। यह सब इतना आसान नहीं है। समझते हो कि बहुत समय है, कहां है ?

अगर मेरा ही जीवन को एक बार पीछे देखते हैं, तब पत्री जी का परिचय मुझे 22 साल से ऊपर हो गया है। अरे ! इतना जल्दी 22 साल खत्म हो गया

करके आश्चर्य होता है। जब पत्री जी का परिचय हुआ है, मेरे पोते हमारे गोद में थे, अब उनके हाथों में अपने बच्चे हैं। जब सोचते हैं बहुत विचित्र लगता है, कि जो हमारे हाथों में थे उनके हाथों में बच्चे आ गए हैं ।

मेरे ही जीवन में देखते-देखते पोते को बच्चे आ गए हैं। मतलब प्रपोते हैं। कितना बदला है? आश्चर्य होता है! हमारे जीवन में ही कितने पीढ़ियां बदल गए हैं? इसलिए किसी को भी यहां से निकलना ही है। इसीलिए क्यों बेकार में चिंता रहता है? आप जो आने को चाहते हो! वह सब नहीं रहेंगे। और जो नहीं रहने वाले के बारे में, क्यों आने को चाहते हो ?

अगर रहते तो, आशा करने में, चिंता करने में, या कष्ट करने में, अपना जीवन बिता सकते हैं। लेकिन किस लिए आप इतना चिंतित रहते हो? तभी वशिष्ट महर्षि ने कहा है कि 'जो आना है आएगा'। उनके बारे में क्यों सोचना है? इस प्रपंच में बहुत सारे आकर्षणों हैं ।

उनके चिंता में क्यों हो? आपको जो करना है, उस पर दृष्टि रखो। आपको जो प्राप्त करना है उसी पर दृष्टि रखो। आपको जो पाना है उसी पर दृष्टि रखो। असलियत में आप कौन है? सोचिए आपको क्या चाहिए ?

वशिष्ट महर्षि ने और क्या कहा है? 'यद्गच्छति तद्गच्छति' मतलब 'जो जाना है वह जाएगा ही'। बहुत चमत्कारी बात है, 'जो आना है आएगा, जो जाना है जाएगा' ।

पत्री जी ने कहा है कि, 'आना है तो आने दो, रहना है तो रहने दो, जाना है तो जाने दो' । लगभग वही श्री वशिष्ट महर्षि ने भी कहा है और पत्री जी ने भी कहा है। 'जो आना है आने दो, जो रहना है रहने दो, जो जाना है जाने दो'।

असलियत में वो क्यों आए हैं आपको उसका कारण मालूम नहीं है, और क्यों रही है भी मालूम नहीं है, और क्यों चला जा रहे हैं वह भी मालूम नहीं है। तब इन सबके बारे में क्यों जानना है? जानना है तभी हम हमेशा संतोष और आनंद में जिएंगे। इसीलिए जानिए की सिर्फ धन प्राप्त करने के लिए ही हम नहीं जी रहे हैं ।

श्री सदानंद योगी जी ने क्या कहा है?

‘मांग कर हासिल नहीं करना है, और बिना मांगने से आने वालों विषयों को मना नहीं करना है। जब आता है उनसे खुशी मत होना और जब जाता है उनसे दुखी मत होना।’ उसने कहा है।

श्री वशिष्ट महर्षि जी ने भी यही बोध किया है।

इसीलिए, आना है, का मांग नहीं करना है, और जब जा रहा है दुखी नहीं होना है। क्योंकि पत्री जी ने कहा की, मांगने से कुछ प्रायोजन नहीं है, और कहा है कि अपने जीवन में किसी भी परिस्थितियों में मांगने से नहीं आयेगा। उनका 3 कारणों बताया है।

1.कोई भी हो अपने ‘प्रारंभ जन्मों में मांगने से नहीं आता है, सिर्फ अर्हत के हिसाब से आएगा’। अगर आपको अर्हत युवा अवस्था में आया है, तब यौवन में आपको अच्छा रहेगा। इससे पहले आपको कुछ खाने का भी ना हो सकता है, जब अर्हत आया है, तब आपको किसी चीज का कमी नहीं है। यहां पर अर्हत मतलब पिछले जन्मों में आपने अगर किया हो, तो वही है, समझते है, बहुत लोग। अगर इस जन्म में भी कर सकते हैं तब भी अर्हत आप पा सकते हैं। इसका अवसर भी है, आपको जानना जानिए ।

इस विषय को बहुत लोग को समझ नहीं आता है। मैंने बहुत लोगों को देखा है। ईस्ट गोदावरी में माचावरम में रमण करके एक आदमी था, प्रारंभ में, मतलब 2004 से 2005 के समय में मंडपेटा गांव में बहुत ध्यानी लोग नहीं रहते थे। तब उस समय हम उनके घर में एक हफ्ता रहकर प्रचार करना चाहता था।

लेकिन उनके घर में कुछ नहीं था, सिर्फ एक ही कमरा था। उसी कमरे में नीचे ज़मीन पर कंबल रखकर उसके ऊपर सोने को कहा है। मैंने भी कुछ नहीं कह कर ऐसे ही 4-5 दिनों वही सोया था।

घर में कुछ भी सामान नहीं था। उनका परिस्थिति वही थी। विचित्र की बात क्या है, दिन में दो तीन क्लास रखता था, खुल मिलाकर 24 क्लासों, हर एक गांव में बताया था ।

लेकिन वह ऐसे निरंतर प्रचार करता ही रहा। जब कि वह खाया या ना खाया, करता ही रहा। चार साल बाद, पता नहीं उसने हैदराबाद चला गया। वहां पर एक छोटा सा दुकान, किराया पर लेकर, कपड़ों का दुकान शुरू किया ।

हमें पता लगा कि उस कपड़ों के दुकान से बहुत पैसा कमाया है और दुकान को बड़ा किया है। एक आदमी को भी रखा है, अपना सहयोग के लिए। मुझे आश्चर्य हुआ है कि किस स्थिति से किस स्थाई तक पहुंचा है ।

एक बार सूरत जाकर 4-5 लाख रूपयों देकर कपड़ों खरीदा था। मुझे आश्चर्य हुआ है, अरे यह आदमी कितना कमाया है! उसका बेटा को इंजीनियरिंग पढ़ाया था और बेटी को भी अच्छी पढ़ाई दिया था। और घर के अंदर बहुत सामान खरीदा है। यह सभी देखकर मुझे आश्चर्य हुआ है कि यह कैसे हुआ है। कैसे रहने वाला है, कैसे हो गया है। तब मैंने सोचा है और समझा कि, उसका जो सेवा किया है उससे अर्हत प्राप्त किया है और इस स्थाई तक उसने पहुंचा है ।

अच्छा! तब इसी जन्म में अगर करेंगे तो, अपनी आर्थिक स्थिति को बदल सकते हैं, का समझ आया है ।

मुझे 2002 नवंबर में पत्री जी से परिचय हुआ है। उस समय मेरे व्यापार में थोड़ा नुकसान हुआ, जबकि अबतक मैने कुछ नुकसान नहीं देखा है। तब सोचने लगा कि मेरी परिस्थिति ऐसे क्यों हो गया है ।

उस समय पता नहीं है पत्री जी मुझे बहुत आकर्षित लगा है। उसका बोध किया ज्ञान मुझे बहुत अच्छा लगा है। तभी यह सारे व्यापारों को बंद किया और इसी कार्यक्रमों में घूमना शुरू किया है।

ऐसे ही 10 साल गया, मुझ में कोई परिवर्तन नहीं आया और बहुत कष्ट उठाया। लेकिन बाहर तो मामूली से दिख रहा था। मैंने तीन दिवसीय क्लास शुरु किया हूँ। उसको भी बिना चिंता कर कर मैंने प्रारंभ किया है, निर्वाहन किया हूँ। ऐसे ही इस मार्ग में बहुत सेवा किया हूँ। 2013 आने तक मेरा अर्हत बढ़ गया है और आर्थिक स्थिति भी बढ़ गई है ।

फिर भी मैंने प्रचार को बंद नहीं किया। किताबें भी लिखता था। गांव गांव घूमते घूमते क्लास बता रहा था। यह सारे सेवा का फल ही 2013 में दिखाई

दिया। इससे पहले जो भी करना चाहा वह ठीक नहीं हुआ। लेकिन अब बिना कुछ चाहे हर मामले में ठीक हो रहा है ।

जब कि व्यापार को बंद किया, मैंने इमारतों को बनवाया, किराए आते हैं और उससे फिर दुबारा बनवाया फिर दुबारा किराए बढ़ते थे। ऐसे करके करके इमारतें, बनाता रहा। लेकिन प्रचार को मैंने बंद नहीं किया है। तभी मुझे समझ आया है कि मेरी 10 सालों का सेवा का फल ही आज परिस्थिति बदलने का कारण है ।

मतलब उससे पहले जितना अर्हत है उतना तो पा लिया हूँ। लेकिन मेरा प्रणलिका वह नहीं है, इसीलिए मुझे वह नहीं चाहिए, तभी मुझे नुकसान हुआ था। तब 'मैंने जो मांगा, वह नहीं मिला, लेकिन मुझे जो जरुरत है वह मिला'। मुझे धन नहीं चाहिए, ज्ञान चाहिए, तभी इस ज्ञान मार्ग में आया हूँ ।

तभी पत्री जी का परिचय हुआ है। मेरी पत्नी भी इस मार्ग में आकर मुझे बहुत सहयोग दिया है ।

इसी प्रकार श्रीकांत के पास भी कुछ नहीं था और फिर अपने कार्यो से अर्हत प्राप्त किया है। खाने के लिए भी कुछ नहीं था। जहां पर भोजन खिलाते थे वहां चले जाता था ।

उतनी हीन जीवन था, ऐसे वाला आदमी को ध्यान प्रचार करने को कहा था। वह महान सेवा है। इसलिए उसका फल ही आज उनका आर्थिक स्थिति बहुत बड़ा है। जब उनको लड़की ढूंढ रहा था उसका आर्थिक स्थिति ठीक नहीं था। जो भी अच्छा काम किया उसका फल तो जरूर मिलेगा। उसका आर्थिक स्थिति बहुत बदला है ।

इसी प्रकार मधु भी अपना पहने हुए कपड़ों से ही हैदराबाद आ गया। जेब मैं एक भी पैसा नहीं था। लेकिन इस मार्ग में आकर सेवा करने के बाद बहुत अच्छा हुआ है ।

आपको आश्चर्य होगा। मुझे समझ आया है कि वह लोगों ने जितना सेवा की हैं, उसका फल ही उनका परिस्थिति का बदलाव हुआ है। ऐसे बहुत लोगों का परिस्थिति मैंने देखा है। इसीलिए कहते हैं अगर आप 'जो करना है करते रहेंगे, तब जो पाना है वह पायेंगे' । वही हमें सीखना चाहिए। बल्कि कुछ

भी ना कर कर, मांगने से या आशा रखने से, या कष्ट करने से, या चिंता करने से, या कुछ भी करो, वह नहीं आएंगे। इसीलिए अगर अर्हत प्राप्त करते हैं, तब आपको जरूर मिलेगा।

ऐसे ही जो जाना है जायेगा। बहुत लोग कमाते हैं। और बाद में वह चला भी जाता है। बहुत दुखी होते हैं। वह समझते भी नहीं की जो आया है और वो चला गया है। बहुत दुखी रहते हैं। जाना था वह चली गई। उसके बारे में क्यों सोचना है। जाने का कारण होगा, और आने का कारण भी है। सब कुछ उस प्रकृति को मालूम है ।

इसीलिए 'जब आता है उत्सव नहीं मनाना है, और जब जाता है दुखी नहीं होना है'। यही बात 'श्री सदानंद योगी' ने कहा है। उसने कहा है कि 'मांगकर कुछ भी हासिल नहीं करना है, बिना मांगकर जो आता है उन्हें मना नहीं करना है'।

मैंने पत्री जी को भी देखा था। जब भी कोई कुछ देता है, अपने कार्यक्रमों के लिए खर्च कर देता है, यही उनका महानता है। उनको बहुत कपड़े देते रहते हैं। फिर से वह दूसरे लोगों को दे देता है। अगर कोई भी मिठाई का पैकेट लाते हैं, वही के वहीं बांट देते हैं। अब हम वही सीख रहे हैं। इसलिए ना केवल धन ही, ज्ञान भी बांटने से आता रहता हैं। इसलिए आपको भी मैंने देने के लिए कहता हूँ।

इसलिए आपका समय बर्बाद मत करना, अय्याशी के लिए उपयोग नहीं करना। आपके शक्तियां, मतलब वॉक शक्ति, देखने की शक्ति, सुनने की शक्ति, काम करने की शक्ति, अद्भुत ज्ञान देने के लिए उपयोग करिए। ज्ञान से ज्यादा महान कुछ नहीं है। वही काम आप सब लोग अभी कर रहे हैं। और तब आप जब बताते रहते हैं आपका कौशलता बढ़ता है। उसको बढ़ाने के लिए ही आध्यात्मिक रिसर्च क्लास रखे थे ।

मामूली सी बात नहीं करना है, उसमें और कौशलता को बढ़ाना है। कोई एक किताब लेकर पढ़ कर बताना नहीं, उसकी अंदर हर एक शब्द का अर्थ बताना चाहिए, उदाहरण के साथ, और उपमानों के साथ, ताकि उनको समझ आएगा। आप सभी लोग अच्छा बनना है, यही मेरी आकांक्षा है ।

श्री मोहम्मद प्रवक्ता ।

'हमारा ज्ञान का धन सुबह भोजन नामक चोर, और रात को नींद नामक चोर, यह दोनों चोरों, हमसे चोरी कर रहे हैं' ।

धन दो प्रकार का है।

1. प्रापंचिक धन   2. आध्यात्मिक धन।

प्रापंचिक धन मतलब भोगों, अर्थात सुख देते हैं। लेकिन आध्यात्मिक धन, अर्थात ज्ञान धन, दुख निवारण करता है, और दुख नहीं आने देता है।

प्रापंचिक धन से एक बड़ा मकान बना सकते हैं, अच्छा सा अलंकार कर सकते हैं, गाड़ियां खरीद सकते हैं, एसी लगवा सकते हैं, ऐसे बहुत कर सकते हैं। इन चीजों से आपको सुख का अनुभव पा सकते हैं। इसीलिए मानव लोग प्रापंचिक धन को चाहता है ।

लेकिन जितना भी धन हो, कितने भी सुख हो, मानव को दुख नहीं होना चाहिए। मतलब समस्याओं, कष्टों, नहीं होना चाहिए। वही सही जीवन है। बल्कि स्वास्थ्य के समस्याओं, आर्थिक समस्याओं, पति पत्नी के बीच में झगड़े, परिवार के समस्याओं, आजू-बाजू वालों से समस्याओं, बुढ़ापे के समस्याओं, से अपना जीवन दुर्भर हो जाता है।

अगर हमें ऐसे दुखों नहीं होना है, तब ज्ञान धन प्राप्त करना चाहिए। वही काम हम सब लोग अभी कर रहे हैं। लगभग 300 से 350 लोग सुबह 4:00 बजे उठकर ज़ूम क्लास में भाग ले रहे हैं, ज्ञान धन पाने के लिए ही। याद रखिए इस लोक में जिसके पास ज्ञान धन है, वही महान है। उनका जो महानता, गौरव, किसी दूसरों को नहीं है। इसीलिए देखें पत्री जी को कितने लोग अभिमान करते हैं? पसंद करते हैं। गौरव करते हैं। वह जहां भी जाता है उनको बहुत मानते हैं।

दिखने में सामान्य दिखता है। लेकिन सब लोग उनको गौरव क्यों करते हैं? इसीलिए की उनके पास अपार ज्ञान धन है। उसी ज्ञान धन को हम सब लोग अभी कमा रहे हैं। इस ज्ञान धन होने वालों को प्रपंचिक धन नहीं होने पर भी, वह जहां भी जाते हैं, उन्हें गौरव मिलता रहता है। जिस गांव भी जाएंगे वहां

पर उनका कुछ कमी नहीं रहता है।

लेकिन प्रापंचिक धन जितना भी हो, कितने करोड़ों भी हो, कोई आपको देखता नहीं है। उनका जहां भी जाते हैं, खुद का खाने को, रहने को, खुद को ही देखना है ।

लेकिन ज्ञान धन होने वाला पत्री जी जब आते हैं, उनके लिए रहने को देखकर और जो भी जरूरतों हैं सब देख रहे हैं। मतलब उनके पास ज्ञान धन ही कारण है। याद रखिए कि ज्ञान धन उतना महान है ।

मोहम्मद प्रवक्ता ने क्या कहा है? जैसे कि प्रपंचिक धन चोरी करने वाले होंगे, वैसा ही इस ज्ञान धन को चोरी करने के लिए, दो चोर है। अगर मानव जागृत होकर नहीं रहेंगे तब यह दोनों चोरों उनसे ज्ञान धन को चुरा लेंगे ।

अगर आपने बहुत सारे पैसे कमा कर अपनी जेब में भरकर जाएंगे, तो कोई न कोई चुरा लेगा। सारे जेब काटने वाले तैयार रहते हैं। इसी प्रकार हमारा ज्ञान धन को चुराने के लिए, दिन के समय में भोजन नामक चोर और रात को नींद नामक चोर रहते हैं। देखिए इतना महान मार्ग में हम सब लोग आए हैं। जब भी अवसर मिलता है, हम सब बैठकर ध्यान कर रहे हैं। क्योंकि सिर्फ ज्ञान के लिए ही कष्ट कर रहे हैं। भीमावरम में तीन दिवसीय क्लास में हर रोज 8 से 10 घंटे भी बैठते हैं ।

अभी तो और ज्यादा भी कर रहे हैं 4:00 बजे से लेकर 6:30 बजे तक ज़ूम क्लास में भाग ले रहे हैं । लेकिन इस भोजन नामक चोर क्या करेगा, मतलब जब ज्यादा खाएंगे तब, आप जब ध्यान में बैठते हैं आपको अच्छी नींद आएगी ।

तब आप सोचेंगे कि ठीक है अभी अच्छा से सो जाएंगे और कल करेंगे। विचित्र की बात क्या है जितना ज्यादा आप खाते हैं, साधना उतना ही कम होता है। इसीलिए योगीयों ने कम खाने को कहा है। अगर पेट को तीन भागों में करेंगे, तब सिर्फ दो ही भागों में भोजन से भरना है और एक भाग को खाली रखना है। इसी को मिताहार कहते हैं ।

ऐसे लोगों को ध्यान में नींद नहीं आएगा, और शरीर सहकार करता है। हर वक्त उत्साह रहता है, जितना भी समय बैठ सकते हैं, ज्ञान को भी पा सकते

हैं। लेकिन इस भोजन नामक चोर, जब ज्यादा रुचि लगता है, तब आप ज्यादा खाते हैं और अगर वैरायटी ज्यादा है, तभी ज्यादा खा लेते हैं। ऐसे लोग ध्यान में सो जाते हैं। तब जिस ज्ञान को पाना है वह नहीं पाएंगे। इसलिए हम ज्ञान धन को नहीं चुराने से बचने के लिए इस भोजन नामक चोर से थोड़ा सावधान रहना है ।

दूसरा चोर रात को करता है, वह नींद है। बहुत लोग सुबह नहीं उठ पाते हैं, लेकिन जो सुबह का ज़ूम क्लास में आते हैं, चार बजे ही उठ जाते हैं। और सैकड़ों लोग, हजारों लोग को आने का मन करता है, ज्ञान प्राप्त करने का मन होता है, महान बनने का मन होता है, समस्याओं से वह निकलने का इच्छा रखते हैं ।

लेकिन वह जो ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, रात को नींद नामक चोर, चोरी कर रहा है। रात का चोर ज्ञान पाने में रुकावट दे रहा है। क्योंकि बहुत जगहों में, जब मैं कहता हूं कि आप ज़ूम क्लास में आने के लिए, वह लोग कहते हैं कि हम सुबह सुबह उठ नहीं पा रहे हैं ।

असलियत में अगर नींद नामक चोर नहीं होता हमारा ज़ूम क्लास भर जाता है, काफी नहीं रहेगा। उस नींद नामक चोर से ही हम बच गए हैं। इसलिए इन दोनों चोरों के विषय में हमें जागृत रहना है, ऐसा कहा है मोहम्मद प्रवक्ता। देखिए कितना महान है ।

ऐसे योगेश्वरों अपार ज्ञान प्राप्त करने वाले हैं। वह लोग हमको ज्ञान के विषय में कई प्रकार के सूचनाएं देते रहते हैं, ताकि हम को नष्ट ना हो। इसीलिए ऐसे लोगों का संदेशों को सावधानी से, आचरण करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

मोहम्मद प्रवक्ता अफ्रीका खंड में मुसलमान देशों में कुरान द्वारा बोध किया है। ऐसा ज्ञान संदेशों ही जीसस क्राइस्ट ने बाइबिल द्वारा पश्चिमी देशों में बोध किया है। इसी प्रकार श्री कृष्ण भगवान ने भारत में भगवत गीता द्वारा बोध किया है। बुद्ध भगवान बहुत बौद्ध लोगों को बोध किया है। ऐसे अपने अपने प्रांतों में बोध किये हैं।

जो अज्ञान में रहते हैं, अज्ञानी लोगों को, उनका संदेशों समझ नहीं कर

कर, दूसरे मज़हब वाले हमसे अलग हैं करके मानते हैं। लेकिन जिसने भी कहा है वह सभी सत्य ही बताएं हैं। अज्ञानता को निकाल कर ज्ञान प्राप्त करने को ही कहा है। इसीलिए मुहम्मद प्रवक्ता से कहा हुआ इन दोनों चोरों के विषय में बहुत सावधानी से रहना है।

इसीलिए पत्री जी सात्विक शाकाहार लेने को कहते हैं, मांसाहार मना करते हैं, अंडे मना करते हैं, लहसुन मना करते हैं। अगर यह सब लेते हैं तब आपका ज्ञान धन निकल जाता है। जो भी थोड़ा बहुत कमाया है वह भी निकल जाता है। आहार कम खाने को कहते हैं। आहार के विषय में बहुत सावधान रहने को कहते हैं ।

इसी प्रकार रात को कम खाने को कहते हैं ताकि सुबह-सुबह जल्दी उठना है। ध्यान और ज्ञान के लिए सुबह-सुबह करने को कहते हैं। नींद भी कम ही होना चाहिए, वे कहते हैं ।

लेकिन कुछ लोग इतने सारे घंटों नींद बिना नहीं उठते हैं। ऐसे लोग ध्यान क्या करेंगे? ज्ञान कैसे प्राप्त करेंगे? बताइए? कोई भी लाभ नहीं पा सकते हैं। देखिए धन को कोई भी चुरा लिया तब उसका परिस्थिति क्या होगा, बताइए। इसी प्रकार ज्ञान धन को चुराने वाला का परिस्थिति भी सोचिए। क्योंकि उनका जो ज्ञान पाना था, इस, दिन और रात चोरों के वजह, अगर अर्जन नहीं कर पा रहे हैं तो अज्ञान में रह जाएंगे। बहुत दुखी होंगे, पूरा जीवन अशांति में रहेंगे ।

इसीलिए याद रखिए इन दोनों चोरों के विषय में बहुत सावधानी से रहना है। मैंने कर्नाटका में एक क्लास बताया। वहां पर अगर आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है तो? करके एक किताब को दिखाकर जब यह कहा था, धन को बढ़ाने के लिए कितने लोग चाहते हैं, जब पूछा था सब लोग हाथ उठाया थे। मुझे हंसी आई थी। इसका मतलब सबको धन चाहिए, मैं सोचा था ।

बाद में मैंने एक और किताब, मरने से पहले मरना है, के बारे में बताया और मैंने पूछा आपको जानना है कि मरने के बाद आपके साथ क्या होगा, तब मैंने कहा कि दोपहर को भोजन करने के बाद मैं बताऊंगा और भोजन के बाद मैंने उनको बता दिया ।

आप जितने करोड़ों पैसे कमाओ, कितना व्यापार करो, जितने भी पैसे हो, आप जब मरेंगे वह सब यहीं पर छोड़कर जाना पड़ेगा। एक भी चीज़ आपके साथ नहीं आएगा। ना आपके बिल्डिंग, या इमारतें, ना आपके गाड़ियां, ना आपके भोगों, ना आपके ज़मीन, कुछ भी नहीं आएंगे। आप जितने भी करोड़ों रूपए बैंक में रखेंगे, या जितना भी सोना रखेंगे, यह सब यहीं पर छोड़कर जाना पड़ेगा, मैंने कहा है ।

कोई भी बिना कुछ आते हैं और बिना कुछ चले जाते हैं। जो आपके पास है, या आप प्राप्त किए हैं, कमाये हैं, एक भी चीज़ आपके साथ लेके नहीं जा सकते हैं। तब आपको लेने के लिए, ऊपर लोकों से दो सहायकों आते हैं।

वह क्या करते हैं यहां पर पृथ्वी पर जो पाप कर्म करते हैं, उनको नरक लोक में लेकर जाते हैं। और जो भी इस पृथ्वी पर पुण्य करते हैं, उन्हें स्वर्ग लोक को लेकर जाते हैं। स्वर्ग में भोगों होते हैं। लेकिन जो पृथ्वी पर ध्यान धन प्राप्त किया है, उन्हें और ऊपर लोकों को लेकर जाते हैं। वह लोग इतना महान बनेंगे, मैंने कहा है ।

उस दिन उस क्लास में मेरे बाजू एक अमीर आदमी बैठा था। तब मैंने उनसे कहा है आपने इतना कमाया है, आप जब मरते हैं कुछ भी लेकर जा सकते हैं क्या? तब उसने बताया कि, नहीं, कुछ नहीं। तब जब मरते हैं आपको क्या लाभ देगा? तब उसने खुद माना कि ज्ञान ही लाभ देगा ।

तब मैंने पूछा कि उस ज्ञान को आपने थोड़ा सा कमाए है क्या अभी तक? तब उसने नहीं कहा था, नहीं कमाया था। तब किस लिए आप इतना कष्ट कर रहे हैं? क्या प्राप्त करने के लिए? मैंने पूछा। तब सब को समझ आया है। तब मैंने फिर से पूछा अब बताइए कितने लोगों को धन कमाना चाहते हैं, तब कोई भी अपना हाथ नहीं उठाया ।

इसीलिए ज्ञान धन का महानता जानिए। उस धन को कोई चुराने का अवसर मत देना ।

इसलिए मोहम्मद प्रवक्ता ने इन दोनों चोरों के विषय में हमें सावधानी से रहने को, कहते है । चेतावनी देते हैं।

एक और योगेश्वर जी ।

'उम्मीदें आसमान में और करनी पृथ्वी पर', ऐसा है मानव का परिस्थिति। इसलिए 'उम्मीदों को कम करिए, और अपनी करनी को बढ़ाइए' ऐसा कहा गया है।

अगर हम देखते हैं सामान्य लोग जिनके पास कुछ ज्ञान नहीं है और सही अवगाहन नहीं है, उनका प्रवर्तन मामूली सी होगा। लेकिन इतना ध्यान साधना हम कर रहे हैं, और इतने सारे विषयों को हम जान रहे हैं, और सीख रहे हैं, अगर हमारा प्रवर्तन ऐसा ही है, तब, सोचिए।

इसीलिए यह बहुत मुख्य विषय अभी बता रहा हूं। इसका मतलब क्या है? हम सब कुछ बता रहे हैं लेकिन आचरण में नहीं दिख रहा है। बहुत महान विषयों को जान रहे हैं, लिख रहे हैं, लेकिन आचरण में नहीं हो रहा है ।

इससे पहले हमने क्या बता चुके हैं, 'आचरणीय संदेशों ही, सुनने वाले को प्रभावित करता है' । इसीलिए जो भी हम कहते हैं उसको आचरण करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

हर एक में अंतरात्मा है। वही आत्मा, साक्षात भगवान है। वह आपके आलोचनाओं को देख रहा है। आपके बातों सुन रहा है। आपका करनी को जान रहा है। यह मत समझना कि उनको कुछ मालूम नहीं है ।

अगर आपका प्रवर्तन उल्टा होगा, वह कैसे हर्षित करेगा? कैसे सहायता देगा? अगर उनका सहायता चाहिए, तब उनको प्रशंसा करना है, और उनका पसंद का प्रवर्तन करना है। लेकिन गप्पे करके, बातों को हवा में, कर्मों करने को पृथ्वी पर से नहीं हिलता है। अगर आपके बातें आसमान में और करनी पृथ्वी पर तब कैसे होगा ?

अंदर का आत्मा कैसे मानेगा? मेरे विषय में एक घटना हुआ है। जब मैं इस मार्ग में आने से पहले, मतलब पत्री जी का परिचय होने से पहले, व्यापर करते थे। एक ही नहीं बहुत सारे करते थे। तब मेरा आकांक्षा धन कमाना। जितना धन कमाया को ही देखता था, लेकिन कैसे कमाया को नहीं देखा, कभी

सोचा भी नहीं ।

पिछले साल से इस साल इतना लाखों जब बढ़ जाता, खुशी रहता। तभी कुछ सेवा करने केलिए उनमें से कुछ हजारों रूपए को सेवा कार्यक्रम में उपयोग करता था ।

पहाड़ जैसे बेईमानी कर कर कमाया लाखों में से थोड़ी सी, नाखून जैसे पैसे को सेवा में उपयोग करता था। और उसी को महान समझता था। देखिए थोड़ा सा पुण्य करने से और पहाड़ जैसे पाप करने पर, क्या आप लाभ पाए हैं? या नष्ट हुए हैं? मतलब नष्ट ही हुआ है ना ?

उसी समय पत्री जी से मेरा परिचय हुआ है। पता नहीं उनका संदेशों, उनका बोधों मुझे बहुत अच्छा लगा, आकर्षित किया। इसलिए मैंने उनका ध्यान करना शुरु किया और इसी ध्यान को गांव गांव जाकर बताना शुरू किया ।

तब जब गांव गांव जाकर क्लास बताते समय, पत्री जी का पास रहकर सीखे हुए नियमों को, और धर्मों को, सब बता रहा था। और अपने आप को महान महसूस करता था। लेकिन बाद में इस व्यापार में बैठकर अपने कर्मों को, बातों को, आलोचनाओं को, और जो मैं बताने वाले विषयों को, दोनों में संबंध ही नहीं था। वहां एक बता रहा था और अभी यहां पर मैं उल्टा कर रहा था। और यह व्यापार के बातों में भी उल्टा कर रहे थे। लेकिन अंदर से आत्मा को महसूस कर रहता, आप क्या बोल रहे हैं? और क्या कर रहे हैं? अंदर से अंतरात्मा चेतावनी को महसूस करता था। ऐसे करनी से अंदर बहुत कष्ट होता था। तब बाद में मुझे समझ आया है कि वह आत्मा पीडन है, दर्द हे। बाद में धीरे-धीरे वह पीडन बढ़ता रहा।

व्यापार में किसी भी तरह से देखेंगे तो अधर्म ही है, बेईमानी है, अक्रम हैं और अन्याय है। मैंने एक कूल ड्रिंक फैक्ट्री चलाता था। वहां भी अपना सारा बुद्धि उपयोग कर कर बहुत माया करता था ।

सही तरीके से बनाने से तीन महीने तक रहेंगे, लेकिन एक ही महीने में खराब होते थे। बहुत लोग पैसे देकर खरीदने वाले अगर ऐसे पानी पिएंगे तो हानिकारक होगा ना? और उस पाप का फल मुझे अनुभव करना है ना ?

अंत में फूड डिपार्टमेंट वाले नमूने लेकर, एक केस लगाया है। यह बहुत

सीरियस होता है। तीव्र होता है, जेल भी भेजते हैं,3 महीने के लिए, या 6 महीने के लिए सज़ा देते हैं। जेल में रखते हैं। देखिए मेरा कितना टेंशन हुआ है। इतना महान आदमी, इतने करोड़ों कमाया है, अगर मैं जेल में जाऊंगा तो मेरा परिस्थिति कैसे रहेगा ?

सब मेरे अंदर का बाधा, अंतर मदन को किसी को बता नहीं सकता था। 6 महीने या 8 महीने तक केस चला है। हर एक स्थगन तारीख को जाना पड़ा। सुबह बैठेंगे तो शाम तक बाहर आता था। तब मैं सोचा था कि मुझे गिरफ्तार करने से ज्यादा यह सज़ा और कठिन है। तब मैं सोचता था कि, यह सब मैंने जो भी किया है उसका फल ही है ।

तब कचेहरी में फिर मैंने पुनर विश्लेषण करने को आवेदन किया। दिल्ली लैब में नमूना को ठीक है करके बताने के लिए कुछ पैसे खर्च कर कर रिपोर्ट लिखवाया। तब उस केस को काट दिए हैं। तब मैंने सोचा था कि दुबारा कभी खाने की चीजों के बिजनेस में नहीं जाना है, ऐसे व्यापर नहीं करना है ।

ऐसे ही एक फाइनांस व्यापार में, अगर कोई अपना किस्त नहीं जमा करते हैं, तब उनके ऊपर गुंडों को भेज कर पैसे वसूली करता था। अगर सीधा-साधा रहकर, धर्म से, उनसे वसूली नहीं कर पाते हैं। मैंने अपनी पूरी बुद्धि उपयोग कर कर कई व्यापर किया हूं। जब से पत्री जी का परिचय हुआ, मुझे मालूम हुआ कि सब अधर्म है, तब तुरंत उन सब व्यापारों को छोड़ दिया था ।

जो धन मेरे पास है वह काफी है जीने के लिए। क्यों और आशा करना है? ऐसे करके मैंने सोचा! अपने जीवन में बहुत सारे विषयों को जाना हूं। मैं अधर्म तरीके से कमाने से, परिवार वालों अनुभव करते हैं, लेकिन अपने पापों सिर्फ मेरे साथ आएंगे। क्या इन पापों को कमाने के लिए मैं यह सब कमा रहा हूं? का विषय जाना हूं ।

तब फिर से सोचा क्या मैं धन कमा रहा हूं? या पापों कमा रहा हूं? तब मुझे समझ आया है कि पापों ही कमा रहा हूं। तब से अपना जीवन को बहुत बदला । अगर कमाना है तो धर्म से कमाना, जितना है उसी में जीना है का सोचा था।

तब मैंने सोचा कि मेरे पास 5000 रूपये कमाने वाला जी रहा है, और

इतने लाखों मेरे पास रहकर, क्या मैं नहीं जी पाऊंगा? तब मैंने सोचा था कि पत्री जी जैसे गुरु मिलने से बहुत खुश हुआ था। इतना अद्‌भुत संदेशों उसने दिया है ।

उन सबको मैंने समझा है, आचरण में लाना शुरू किया है, और वही सब को बोध कर रहा हूं। इसलिए तब इतना धन कमाने से शांति नहीं रहता था, अब बिना कमाई भी बहुत शांति से और आनंद से जी रहा हूं ।

उससे पहले मैं और अपनी मैडम दोनों में झगड़े होते थे। दोनों पसंद करते हैं, लेकिन झगड़े होते रहते हैं। एक, दो, दिन के लिए बात नहीं करते थे। लेकिन अब बहुत प्रेम से रहते हैं। और एक दूसरों को सहकार करते हैं। यह बदलाव किस लिए आया है? धर्म से जीने कि वजह से, और धर्म से कमाने कि वजह से ।

बताइए अभी हमें कोई कमी है क्या? किसी भी विषय में हमें कमी नहीं हैं । जो भी काम सोचते हैं हर काम कर पा रहे हैं। हम अय्याशी में खर्च नहीं करते हैं, लेकिन चाहने वाले सारे सेवाएं कर पा रहे हैं।

इसलिए योगेश्वरों का संदेशों सामान्य नहीं है। याद रखिए 'उम्मीदें आसमान पर नहीं होना चाहिए, और करनी पृथ्वी पर नहीं होना चाहिए' । 'आपके करनी आसमान में होना है, और उम्मीदें कम करना है', मतलब उम्मीदों को कम करना है, और अपना कर्मों को बढ़ाना है। यही विषय योगेश्वरों ने कहा है।

योगियों जो कहते हैं वही करना है। जो आप नहीं करते हैं उनको बताने में संकोच रहना है। कम से कम आप बताने के बाद भी, आचरण में लाने को प्रयत्न करिए। सिर्फ कुछ भी बोलना नहीं है। अंदर से आत्मा देख रहा है, भूलना नहीं है।

आप समझते हैं कि आपके संदेशों को किसी को मालूम नहीं है। लेकिन आपके अंदर का अंतरात्मा को मालूम है, वह भूलना नहीं चाहिए। अंतरात्मा के अनुसार चलिए। इस केलिए कठोर ध्यान साधना करना चाहिए, और योगियों के संदेशों को आचरण मे लाना चाहिए ।

'उम्मीदें कम कीजिए, करनी बढ़ाइए।'

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

ब्र्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी का हिन्दी किताब

1) एक और जन्म । Rs.160/-

2) ज्ञान माला Rs.70/-

3) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं। Rs.70/-

4) अगर मानव को योगी बनना है तो ? Rs.60/-

5) महात्माओं के संदेशों। Rs.50/-

6) मानव के कर्तव्यों। Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।..............................Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।..............................Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।......................Rs.160/-
4) सत्य मार्ग ।..................................Rs.160/-
5) मरने से पहले मरना है।......................Rs.130/-
6) ‘गाइडिंग’ ध्यान क्यों नहीं ?..................Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं।..............................Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत ।..............................Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ..................Rs.120/-
10) ब्रह्म ज्ञान।....................................Rs.100/-
11) यह जीवन क्यों हैं ?............................Rs.100/-
12) मेहर बाबा का संदेश।........................Rs.100/-
13) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।...Rs.80/-
14) भागवत के दृश्यों का अर्थ.....................Rs.80/-
15) आत्मा हंतक कौन होता है?....................Rs.70/-
16) दुख निवारण का मार्ग...........................Rs.75/-
17) उत्तम पुरुष.......................................Rs.60/-
18) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?................Rs.60/-
19) निर्वाण मार्ग.....................................Rs.60/-
20) सत्य...Rs.50/-
21) क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
22) गुरु को पहचानना कैसे ?......................Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

'आत्मा को जो लापरवाही करता है, वह आत्मा हंतकों' बन जाते हैं।

आत्महत्या का मतलब ,जो भी खुद अपनी आत्मा को, अपना शरीर के अंदर नहीं रहने लायक, अपने शरीर को नाश करते हैं, उसी को आत्महत्या कहते हैं।

जो अपना पूरा जीवन काल में आत्मा के बार में नहीं सोचता है, और आत्मा के लिए कुछ नहीं करता है, आत्मा लाभ के लिए नहीं सोचता है, और आत्मा है का विषय भी नहीं जानता है, वह इस पृथ्वी पर कितने बड़े महान कार्य करें या कितने कुछ हासिल किए हैं, वह 'आत्मा हंतक' ही हो जाते हैं, योगेश्वरों ने कहा है।

धन कमाने में संतुष्टि रखिए। ज्ञान पाने में संतुष्टि में नहीं रहिएगा। इसका मुख्य कारण यही है कि आप इस शरीर नहीं है, आप आत्माएं हैं, यह समझिए। पूरा जीवन काल में अगर आप आत्मा को जरूरत कार्यो नहीं करते हैं, तब आप 'आत्मा हंतकों' बन जाते हैं, यह भी जानिए। आत्मा को नुकसान नहीं करना चाहिए, आत्मा को पीड़ा नहीं देना है।

- ब्र्ह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.70/-